सैंटर फॉर डिस्टैंस एंड आनलाईन ऐजुकेशन विभाग

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

कक्षा : बी.ए. भाग–1 *सैमेस्टर–1*

(हिन्दी साहित्य) *एकांश संख्या : 2*

माध्यम : हिन्दी

पाठ नं.

2.1 हिन्दी उपन्यास : स्वरूप और विकास

2.2 'थके पांव' उपन्यास का सार

2.3 'थके पांव' : चरित्र चित्रण

2.4 'थके पांव' : परिवेश तथा संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य और सप्रसंग व्याख्या

Department website : www.pbidde.org

पाठ संख्या : 2.1 लेखिका : डॉ. हरिसिमरन कौर

हिन्दी उपन्यास : स्वरूप और विकास

पाठ की रूप-रेखा :

2.1.0 उद्देश्य
2.1.1 प्रस्तावना
2.1.2 उपन्यास के तत्व
2.1.2.1 कथावस्तु
2.1.2.2 चरित्र–चित्रण
2.1.2.3 परिवेश
2.1.2.4 संरचना शिल्प
2.1.2.5 प्रतिपाद्य
2.1.3 हिन्दी उपन्यास का विकास
2.1.3.1 प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास
2.1.3.2 प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास
2.1.3.3 प्रेमचन्दोत्तर युगीन हिन्दी उपन्यास
2.1.3.4 स्वयं जांच अभ्यास
2.1.4 सारांश
2.1.5 प्रश्नावली
2.1.6 सहायक पुस्तकें

2.1.0 उद्देश्य

पाठ्यक्रम का यह भाग हिन्दी उपन्यास से संबंधित है। इसमें हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'थके पांव' का अध्ययन करेंगे। इस पाठ में आपको उपन्यास के स्वरूप एवं हिन्दी उपन्यास के विकास के बारे में परिचय दिया जाएगा। इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- उपन्यास के स्वरूप को बता सकेंगे,
- उपन्यास के तत्वों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे,
- हिन्दी उपन्यास के विकास को पहचान सकेंगे,
- हिन्दी उपन्यास के विकास के विभिन्न चरणों में इस विधा में क्या–क्या परिवर्तन हुए तथा

कौन–कौन से लेखकों ने इस विधा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, इस इतिहास को प्रस्तुत कर सकेंगे।

2.1.1 प्रस्तावना

इस पाठ से आरम्भ होकर आगामी पाठों में आपको भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'थके पांव' का विस्तृत अध्ययन करवाया जाएगा। इस अध्ययन से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि उपन्यास क्या है, इसके कौन–कौन से भिन्न तत्व हैं, उन तत्वों की क्या विशेषताएं हैं। साथ ही यह जानना भी आवश्यक है कि हिन्दी उपन्यास का विकास कैसे हुआ और किन–किन उपन्यासकारों ने इस विधा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी उपन्यास का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इस विधा का आरम्भ 19वीं शताब्दी के प्रथम दशक से हुआ। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में सबसे पहले तिलस्मी, जासूसी और ऐप्यारी उपन्यासों की रचना हुई। सन् 1877 में श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास की रचना की और सन् 1882 में लाला श्रीनिवास दास ने 'परीक्षागुरु' नामक उपन्यास लिखा। मुंशी प्रेमचन्द के आगमन से हिन्दी उपन्यास को एक नया आयाम मिला। इसके बाद हिन्दी उपन्यास में नये–नये प्रयोग होते रहे। इस पाठ में उपन्यास के तत्वों एवं विकास पर विचार किया जाएगा।

2.1.2 उपन्यास के तत्व :

'उपन्यास' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है – उप+न्यास। 'उप' उपसर्ग का अर्थ है – सामने या पास रखा हुआ और 'न्यास' शब्द का अर्थ है धरोहर या रखना। इस आधार पर उपन्यास शब्द का अर्थ है – एक लेखक अपने जीवन और समाज के आस–पास जो कुछ देखता–सुनता या अनुभव करता है और अपने भाव–विचार तथा कल्पना के द्वारा सजा–संवार कर उसे हमारे सामने प्रस्तुत करता है, वहीं उपन्यास कहलाता है। वह साहित्यिक रचना जिसे पढ़कर लगे कि उसमें वर्णित घटना हमारे निकट की नहीं बल्कि हमारी ही है, वह उपन्यास कहलाती है। उपन्यास की एक निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती। सामान्यतः यह स्वीकार किया जा सकता है कि उपन्यास आधुनिक जीवन के यथार्थ को बहुत निकटता से पहचानने और उपस्थित करने वाली विधा है। यह आधुनिक गद्य–विधा है, जो यथार्थ को बहुत सहजता से उभारती है। इसमें जीवन के यथार्थ को कल्पना द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसके पात्र जीवन्त एवं यथार्थ होते हैं और घटनाएं हमारे जीवन से ही संबंध रखती हैं। उपन्यास के बारे में मुंखी प्रेमचन्द ने कहा है – "मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र–मात्र समझता हूँ। मानव जीवन पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोजना ही उपन्यास के मूल तत्व हैं।" हिन्दी में पहले जासूसी एवं चमत्कारी उपन्यास लिखे जाते रहे, जिससे पाठक को आनन्द एवं रोमांच का अनुभव होता था। ऐसे उपन्यासों में घटना प्रधान होती थी। आज का उपन्यासकार ऐसी घटनाओं को महत्त्व नहीं देता। वह अपनी रचना में वास्तविकता लाने का प्रयास करता है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक उन्नति के कारण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तेज़ी से विकास एवं परिवर्तन आ रहे हैं। प्रारम्भ में भिन्न भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद द्वारा इस विधा का विकास हुआ।

उपन्यास विधा का जन्म पश्चिम में हुआ। पश्चिम के लेखकों ने इस विधा को अत्यन्त लोकप्रिय बनाया और समयानुसार इसमें परिवर्तन भी किए। उपन्यास में मानव जीवन का व्यापक चित्रण होता है। इसमें पात्रों के जीवन का सम्पूर्ण चित्रण होने के कारण पात्रों की संख्या अधिक होती है। आकार एवं संरचनागत दृष्टि से एक कहानी और उपन्यास में अन्तर पाया जाता है। उपन्यास में सम्पूर्ण जीवन का परिचय दिया जाता है और कहानी में जीवन की एक घटना या एक अंशका। एक उपन्यास में निम्नलिखित बातें अवश्य होती हैं –

– किसी एक घटना का वर्णन,

– घटना का किसी पात्र का से सम्बन्ध,

– घटना का किसी स्थान या समय से सम्बन्ध,

– घटना में वर्णित पात्रों का आपसी वार्तालाप,

– घटना को लेखक द्वारा अपने ढंग से प्रस्तुत करना, और

– रचना के पीछे लेखक का कोई न कोई उद्देश्य होना।

किसी भी उपन्यास में निम्नलिखित तत्वों का होना भी आवश्यक होता है :

1. कथावस्तु	2. पात्र या चरित्र चित्रण	3. देशकाल या परिवेश
4. संवाद और भाषा	5. शैली	6. उद्देश्य

संवाद, भाषा और शैली को संरचना–शिल्प भी कहा जाता है और उद्देश्य को प्रतिपाद्य भी कहते हैं।

बोध प्रश्न : नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। इनके द्वारा उपन्यास के तत्वों का निर्धारण कीजिए :

(1) उपन्यास में घटना का सम्बन्ध पात्रों से होता है।

(2) उपन्यास में वर्णित पात्र आपस में बातचीत करते हैं।

(3) उपन्यास की घटना का संबंध किसी स्थान या काल से होता है।

(4) उपन्यासकार अपने ढंग से कथा को प्रस्तुत करता है।

(5) कथा को कहने के पीछे कोई न कोई कारण होता है।

अभ्यास : 1. चार पंक्तियों में आधुनिक उपन्यास की विशेषताएं बताइए :

2.1.2.1 कथावस्तु

उपन्यास में जिस घटना का वर्णन किया जाता है, उसे कथावस्तु कहते हैं। इसमें घटना का चित्रण विस्तार से किया जाता है, क्योंकि घटना के विस्तार के लिए पर्याप्त अवसर रहता है। उपन्यास में कथावस्तु के स्वाभाविक विस्तार के लिए कथा का श्रृंखलाबद्ध होना आवश्यक है अर्थात् एक प्रसंग का दूसरे प्रसंग के साथ या एक भाव का दूसरे भाव के साथ स्वाभाविक क्रम एवं सम्बन्ध होना आवश्यक है। उपन्यास की कथा उसमें चित्रित पात्रों के चरित्र को विकसित करने वाली होनी चाहिए। आधुनिक उपन्यासों में कथावस्तु का आधार कोई भी सामाजिक समस्या होती है। कथा का आरम्भ किसी भी घटना या वर्णन से हो सकता है। कथावस्तु पात्रों के वार्तालाप या पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण से भी हो सकता है। यह आवश्यक नहीं कि कथावस्तु का एक निश्चित आरम्भ या अन्त हो। यह कहीं से भी शुरू होकर कहीं भी समाप्त हो सकती है।

2.1.2.2 चरित्र-चित्रण :

उपन्यास में पात्रों की संख्या असीमित हो सकती है, जिनमें से एक या एक से अधिक पात्र महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। चरित्र–प्रधान उपन्यास में एक पात्र को ध्यान में रख कर कथा का विकास किया जाता है। आगे आप 'थके पांव' नामक उपन्यास का अध्ययन करेंगे, जिस में केशवदास नामक प्रधान पात्र के इर्द–गिर्द उपन्यास की सारी कथा घूमती है। पूरा उपन्यास इसी पात्र के जीवन से संबंधित है। उपन्यास में पात्रों के चरित्र के विकास के लिए पर्याप्त समय होता है। कुछ उपन्यासों के पात्र समाज के किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं और कुछ उपन्यासों में मानव मन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यासकार पात्रों

के चरित्र–चित्रण के लिए कई प्रकार की विधियां अपनाता है। वह पात्र द्वारा किए गए कार्यों द्वारा उसके चरित्र की विशेषताओं को उजागर करता है। जब एक पात्र दूसरे पात्र से वार्तालाप करता है, या एक पात्र अपने बारे में जो कुछ सोचता है, उसके माध्यम से भी उसका चरित्र उजागर होता है। लेखक स्वयं भी पात्रों के बारे में बहुत कुछ कहता हुआ उनका चरित्र–चित्रण करता है।

2.1.2.3 परिवेश

परिवेश से तात्पर्य होता है – देश एवं काल। उपन्यास में वर्णित देश एवं काल का विशेष महत्त्व होता है। लेखक को इस विषय में उचित जानकारी होनी आवश्यक है, इससे रचना में सहजता एवं स्वाभाविकता आ जाती है। यदि लेखक अपनी रचना में ग्रामीण जीवन का वर्णन करता है तो उसे इस जीवन विषयक पूरी जानकारी होनी चाहिए। गांव के घर, गलियां, खेत–खलियान लोगों के रहन–सहन, खान–पीन, रीति–रिवाज, पशुधन तथा अनुष्ठान आदि की पूरी जानकारी होने पर ही लेखक ग्रामीण जीवन का सच्चा एवं सहज चित्रण कर सकता है। इसी तरह शहर के जीवन से संबंधित घटनाओं का वर्णन करने के लिए शहरी जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक होता है। प्रत्येक उपन्यास का कथानक किसी काल तथा परिवेश से जुड़ा हुआ होता है। कथानक का परिवेश जितना स्वाभाविक और यथार्थपरक होगा, उपन्यास उतना ही विश्वसनीय एवं यथार्थ नज़र आएगा। उपन्यासकार लम्बे–चौड़े विवरणों द्वारा परिवेश को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। परिवेश के स्वाभाविक चित्रण के लिए ज़रूरी है कि लेखक उपन्यास में वर्णित समाज की व्यवस्था को समझे और उसमें रहने वाले लोगों के रहन–सहन, सभ्यता की प्रगति और मानव मूल्यों का सही ज्ञान प्राप्त करे।

2.1.2.4 संरचना शिल्प

उपन्यास की भाषा, शैली एवं संवाद की बनावट संरचना शिल्प के अन्तर्गत आती है। प्रत्येक रचनाकार की लेखन–विधि अपनी होती है, जो उसकी रचना की शिल्प–विधि कहलाती है। रचना में भाषा का प्रयोग एवं संवाद–योजना भी लेखक की अपनी विधि पर निर्भर करती है। शैली से तात्पर्य है – रचना करने का ढंग। प्रत्येक लेखक की शैली उसकी व्यक्तिगत रुचि और विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण के अनुसार निश्चित होती है। लेखक कथावस्तु को जिस ढंग से प्रस्तुत करता है वही उसकी शैली कहलाती है। कुछ लेखक अपनी रचना में मनुष्य के जीवन के बाह्य पक्ष पर बल देते हैं और कुछ मनुष्य के मनोभावों को अधिक महत्त्व देते हैं। इसी तरह कुछ रचनाकारों का उद्देश्य सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण होता है, इसलिए उनकी शैली में परिवर्तन आ जाता है। इसी आधार पर वर्णनात्मक, चित्रात्मक, मनोवैज्ञानिक तथा व्यंग्यात्मक आदि विभिन्न प्रकार की शैलियां अस्तित्व में आती हैं। संरचना शिल्प के अन्तर्गत संवाद का विशेष महत्त्व होता है। इसे वार्तालाप भी कहा जाता है। संवादों से उपन्यास में नाटकीयता आती है और कथावस्तु आगे बढ़ती है। उपन्यास में चरित्रोद्घाटन के लिए संवादों का होना आवश्यक है। भाषा का उचित प्रयोग भी उपन्यास की संरचना को व्यवस्थित रूप प्रदान करता है। उपन्यास में सरल एवं सहज–स्वाभाविक भाषा का प्रयोग होना चाहिए ताकि उसे पाठक सहजता से समझ सके। इसके लिए ज़रूरी है कि आम बोल–चाल की भाषा के शब्दों का सरल वाक्यों में प्रयोग हो।

2.1.2.5 प्रतिपाद्य

प्रतिपाद्य का सामान्य अर्थ है – उद्देश्य। उपन्यास की कथावस्तु द्वारा लेखक क्या कहना चाहता है, यही उद्देश्य कहलाता है। उपन्यास के उद्देश्य को समझने के लिए उसे सही ढंग से पढ़ना आवश्यक होता है। उपन्यास के संदेश का सामाजिक एवं साहित्यिक मूल्यांकन करने के बाद उसके महत्त्व को समझा जा सकता है।

2.1.3 हिन्दी उपन्यास का विकास

हिन्दी उपन्यास से संबंधित कोई भी अध्ययन करने से पहले यह जानना भी आवश्यक है कि इसका विकास–क्रम क्या है। इससे हम जान पाएंगे कि हिन्दी का उपन्यास साहित्य अपने आरम्भिक रूप में कैसा था, उसकी क्या–क्या विशेषताएं थी और हिन्दी उपन्यास के विकास–क्रम में क्या–क्या परिवर्तन आए। हिन्दी उपन्यास का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। वास्तव में इसका आरम्भ भारतेन्दु काल में हुआ, जिसमें सर्वप्रथम बंगला के उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। इस काल में लाला श्रीनिवास दास के उपन्यास 'परीक्षा गुरू' को हिन्दी का पहला उपन्यास माना जाता है। आधुनिकतम शोध के अनुसार अब श्रद्धाराम फिल्लौरी द्वारा लिखित 'भाग्यवती' उपन्यास हिन्दी का पहला उपन्यास माना जाता है। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचन्द का योगदान विशेष महत्त्व रखता है। इसलिए इसके विकास क्रम का अध्ययन करते समय इन्हीं को आधार मान कर हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम को तीन भागों में बांटा जा सकता है :

2.1.3.1 प्रेमचन्द एवं हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्द से पहले हिन्दी में दो प्रकार के उपन्यास लिखे गए। कुछ उपन्यास केवल मनोरंजन की दृष्टि से लिखे गए, जिनमें तिलस्मी, ऐयारी एवं जासूसी उपन्यास आते हैं। इन उपन्यासों में प्रमुख हैं – देवकीनंदन खत्री रचित चन्द्रकान्ता और चन्द्रकान्ता संतति, किशोरीलाल गोस्वामी रचित तिलस्मी शीशमहल, हरेकृष्ण जौहर रचित कुसुमलता और रामलाल वर्मा रचित पुतनी महल। जासूसी उपन्यासकार गोपालराम गहमरी ने अद्‌भुत लाश, बेकसूर की फाँसी और सरकती लाश आदि उपन्यासों की रचना की। इन उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन था। इनमें विचित्र घटनाओं एवं प्रेमकथाओं द्वारा कौतूहल उत्पन्न किया जाता था। तिलिस्मी उपन्यासों में दो–तीन कथाओं को गुत्थियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता था, जिन्हें सुलझाने के लिए लेखक अनेक घटनाओं का वर्णन किया करता था। इन उपन्यासों की भाषा अत्यन्त सरल एवं स्वाभाविक होती थी। कुछ उपन्यास संदेश–प्रधान होते थे, जिनमें उस समय की सामाजिक समस्याओं का चित्रण करके उनका समाधान भी दिया जाता था। इन रचनाओं में लेखक समाज का यथार्थ चित्रण करते हुए विभिन्न सामाजिक बुराईयों को दूर करने का उपाय बताता था। ऐसे उपन्यासों में श्रीनिवास दास का परीक्षा गुरू, राधाकृष्ण दास का निसहाय हिन्दू, बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी, एक अजान सौ सुजान, ठाकुर जगमोहन सिंह का श्यामा स्वप्न, किशोरी लाल गोस्वामी का अधखिलाफूल तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय का ठेठ हिन्दी का ठाठ प्रमुख हैं। इस समय कुछ ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना भी हुई जिनमें भारतीय इतिहास के अतीत की कथावस्तु को कल्पना के सहारे प्रस्तुत किया गया। ऐसे उपन्यासों में किशोरीलाल गोस्वामी का हृदयहारिणी, आदर्श रमणी, तारा तथा रजिया बेगम प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त गंगाप्रसाद गुप्त की रचना पृथ्वीराज चौहान तथा श्यामसुन्दर बैद्य की रचना 'पंजाब पतन' महत्त्वपूर्ण हैं। इस युग के उपन्यासों में आदर्शवाद के साथ भावुकता तथा भारतीय आदर्शों को प्रस्तुत किया गया।

2.1.3.2 प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास

हिन्दी उपन्यास के विकास में मुंशी प्रेमचन्द का आगमन एक नये युग का सूत्रपात करता है। इन्होंने पहली बार जीवन के यथार्थ को साहित्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इनका पहला उपन्यास सेवासदन सन् 1911 में प्रकाशित हुआ। इसमें समाज की एक समस्या का यथार्थ चित्रण किया गया। लेखक ने सामाजिक अत्याचारों से पीड़ित भारतीय नारी के पतन पर विचार करते हुए वेश्यावृत्ति में सुधार लाने का प्रयास किया। सामाजिक कुरीतियां, राष्ट्रीय भावनाएं, ग्रामीण जीवन की समस्याएं, मज़दूरों, किसानों की समस्याएं प्रेमचन्द के उपन्यासों के प्रमुख विषय रहे। लेखक ने इन समस्याओं के चित्रण के साथ–साथ मानवीय भावनाओं का भी विश्लेषण किया। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में व्यवहारिक बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया और साथ ही मुहावरों तथा

कहावतों का प्रयोग करके भाषा को सहजता प्रदान की। इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं – प्रेमा, वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन गोदान और मंगलसूत्र (अधूरा)। प्रेमचन्द युग के अन्य उपन्यासकार हैं – विश्वेश्वरनाथ शर्मा (रचना – भिखारिणी, माँ), पांडेय बेचन शर्मा उग्र (बुधुवा की बेटी, शराबी), चतुरसेन शास्त्री (हृदय की प्यास, अमर अभिलाषा, बहते आंसू) और सियाराम शरण गुप्त (गोद, अंतिम आकांक्षा), जयशंकर प्रसाद रचित उपन्यास हैं – कंकाल, तितली और इरावती। प्रेमचन्द युग में उपन्यास लेखन में दो प्रकार की लेखन शैली का जन्म हुआ – प्रेमचन्द शैली तथा प्रसाद शैली। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में घटनाओं को अधिक महत्त्व दिया और प्रसाद ने मानव मन के विश्लेषण पर बल दिया।

2.1.3.3 प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यास के विकास में विशेष गति आई। प्रेमचन्द की यथार्थवादी परम्परा में से सामाजिक एवं समाजवादी उपन्यास लेखन की परम्परा विकसित हुई। इन उपन्यासों में समाज की वास्तविकताओं को प्रमुख स्थान दिया और धार्मिक अंधविश्वासों, सामाजिक रूढ़ियों और आर्थिक शोषण को उपन्यासों की कथावस्तु में स्थान प्राप्त होने लगा। इस प्रकार के उपन्यासों में यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, अमृत राय, रांगेय राघव, भीष्मसाहनी, अमृतलाल नागर, मोहन राकेश तथा राजेन्द्र यादव आदि के उपन्यास आते हैं। इस समय कुछ अन्य लेखकों ने मानव मन को कथा का मुख्य आधार बना कर व्यक्ति की मानसिक समस्याओं पर विचार किया। ऐसे उपन्यासों पर मनोवैज्ञानिक फ्रायड, एडलट एवं युंग के विचारों का प्रभाव पड़ा। इन उपन्यासों में मानव मन की अवचेतन क्रियाओं एवं मानसिक ग्रंथियों को कथा का आधार बनाकर पात्रों का चरित्र–चित्रण प्रस्तुत किया गया। ऐसे उपन्यासों में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय के उपन्यास प्रमुख हैं। इसी युग में आंचलिक उपन्यास भी लिखे गए, जिनमें किसी क्षेत्र या अंचल विशेष को कथा का आधार बना कर उस क्षेत्र के रहन–सहन, आचार–विचार एवं भाषा आदि का विशेष वर्णन किया गया। हिन्दी के प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास हैं – मैला आंचल, परती परिकथा, सागर लहरें और मनुष्य, कब तक पुकारूं और आधा गाँव। इसी काल में कुछ ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना भी हुई, जिनमें मुख्य हैं – दिव्या, सिंह सेनापति और मुर्दों का टीला।

2.1.3.4 स्वयं जांच अभ्यास

1. प्रेमचन्द युग की किसी एक प्रवृति पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

2.1.4 सारांश

इस पाठ में आपने यह देखा कि उपन्यास विधा साहित्य की लोकप्रिय विधा है। इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ने के बाद आपने यह भी जान लिया कि उपन्यास का स्वरूप क्या है। उपन्यास केवल काल्पनिक कथा नहीं बल्कि जीवन के सत्यों को प्रस्तुत करने वाली विधा है। हिन्दी उपन्यास का आरम्भ 19वीं शदी के प्रथम दशक में हुआ। उस समय से लेकर आज तक हिन्दी उपन्यास लेखन परम्परा में विभिन्न परिवर्तन आते रहे हैं। वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य संसार में उपन्यास का विकसित एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है।

2.1.5 प्रश्नावली

1. उपन्यास के तत्वों पर चर्चा करें।

2. उपन्यास का विकास कैसे हुआ।

2.1.6 सहायक पुस्तकें

1. साहित्यिक निबन्ध – गणपति चन्द्रगुप्त
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास युग और प्रवृतियां – शिव कुमार शर्मा

पाठ संख्या : 2.2 लेखिका : डॉ. हरिसिमरन कौर

'थके पांव' उपन्यास का सार

रूप-रेखा

2.2.0 उद्देश्य
2.2.1 प्रस्तावना
2.2.2 'थके पांव' उपन्यास का सार (कथावस्तु)
2.2.3 कथावस्तु की समीक्षा
2.2.3.1 स्वयं जांच अभ्यास
2.2.4 सारांश
2.2.5 प्रश्नावली
2.2.6 सहायक पुस्तकें

2.2.0 उद्देश्य

इस पाठ में आप प्रसिद्ध कथाकार श्री भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'थके पांव' के सार अथवा कथावस्तु से परिचित हो सकेंगे। इसे पढ़ने के बाद आप :

- उपन्यास की कथावस्तु से परिचित हो पाएंगे।
- इस उपन्यास की कथा संक्षेप में बता सकेंगे।
- उपन्यास में आए पात्रों से परिचित हो सकेंगे।
- इस उपन्यास के आधार पर उस परिवेश की चर्चा भी कर सकेंगे, जिसका वर्णन इसमें किया गया है।
- उपन्यास की भाषा–शैली की विशेषताएं बता सकेंगे।
- उपन्यास के प्रतिपाद्य की व्याख्या कर सकेंगे।

2.2.1 प्रस्तावना

उपन्यास कथा–साहित्य की आधुनिक विधा है। यह कहानी की तुलना में आकार में बड़ा होता है। इसका कारण यह है कि उपन्यास में जीवन का व्यापक चित्रण होता है, जबकि कहानी में जीवन के किसी एक खंड का चित्रण होता है। उपन्यास में कई चरित्रों का विशद वर्णन किया जाता है और उसका घटना फलक भी व्यापक होता है। इसमें भाषा एवं शैली का अधिक वैविध्य भी मिलता है। मनुष्य का जीवन जटिल होता है, उसी के अनुरूप पात्रों के जीवन के चित्रण उपन्यासकार का लक्ष्य होता है। उपन्यासकार जीवन के प्रत्येक पक्ष का विशद चित्रण

करके विभिन्न मनोवृतियों के पात्रों का परिचय देता है। भगवती चरण वर्मा हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं, जिन्होंने 'अपने खिलौने', 'आखिरी दांव' तथा 'थके पांव' आदि उपन्यासों की रचना की है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र सामान्य मनुष्य का प्रतीक है, जो जीवन भर संघर्ष करते–करते अन्त में थक कर टूट जाता है और उसके पांव इतने थक जाते हैं कि वह स्वयं को पूर्ण रूप से थका हुआ महसूस करता है।

2.2.2 'थके पांव' उपन्यास का सार (कथावस्तु)

इस उपन्यास की कथावस्तु का सम्बन्ध कानपुर शहर में रहने वाले एक परिवार से है। लेखक ने उपन्यास की कथा को बारह भागों में बांटा है। यह भाग छोटे–छोटे अध्यायों के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। इन अध्यायों के परिचय के आधार पर हम इस रचना की कथावस्तु का विश्लेषण करेंगे, ताकि उपन्यास का सार पूर्ण रूप से स्पष्ट हो सके।

प्रथम अध्याय में लेखक अपनी तरफ से एक व्यक्ति का परिचय देता है, जो अब बूढ़ा हो गया है। इस व्यक्ति का कोई नाम नहीं दिया गया। वह केवल एक बूढ़ा व्यक्ति है, जो जीवन भर मेहनत करके थक गया है। वह अपने घर की तरफ चला जा रहा है। उसके पैरों में दर्द हो रहा है और उससे चला नहीं जा रहा। उसके पैरों में कोई कष्ट नहीं है फिर भी वह चलते समय कष्ट का अनुभव कर रहा है। उसे लगता है कि वह बहुत बुरी तरह से थका हुआ है। उसके जूते फटे हुए हैं। बहुत दिनों से वह नये जूते लेना चाहता है, परन्तु ले नहीं पाया। उसके मोजों में अनेक छेद हो गए हैं, परन्तु वह इतना विवश है कि नये जूते–मोजे नहीं ले सकता। धीरे–धीरे लड़खड़ाता हुआ वह अपने कमरे में पहुंच जाता है, जहां एक तख्त पर पन्द्रह साल पुरानी दरी बिछी हुई है। वह एक आरामकुर्सी पर गिर जाता है और जूते–मोजे उतारता है और फिर तख्त पर लेट जाता है।

यह व्यक्ति अपने भीतर एक अजीब प्रकार की बेचैनी का अनुभव करता है। उसे लगता है कि उसे बेबसी एवं विवश्ता का रोग हो गया है, जिसका इलाज होना चाहिए। वह अपनी कल की ज़िन्दगी से मुक्त होकर नया जीवन जीना चाहता है, परन्तु उसे शंका है कि ऐसा कुछ नहीं होगा। जैसे वह उम्र भर चलता रहा है, चल–कर थक गया है, वैसे ही आगे भी चलते रहना होगा। उसके मन पर कितनी भी उदासी क्यों न हो, फिर भी उसे चलना पड़ेगा। उसके पैर कितने भी थके हों, उसे और चलना पड़ेगा। इस अध्याय में इस थके हारे व्यक्ति का सामान्य सा परिचय पाठक को देकर लेखक कथा को आगे बढ़ाता है।

इस अध्याय में उपन्यास के मुख्य पात्र केश्वचन्द्र का परिचय दिया गया है। केश्वचन्द्र वह व्यक्ति है, जो पिछले अध्याय में एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में आया है। तख्त पर लेटा हुआ वह अपने विगत् जीवन को याद करता है। उसके पिता का नाम रामचन्द्र था, जो कानपुर की एंड्रज कम्पनी में छोटे बाबू यानि कलर्क थे। इन्हें पचास रुपए वेतन मिलता था, जिसमें उसके परिवार की ज़रूरतें बड़े आराम से पूरी हो जाती थीं। परिवार में रामचन्द्र की पत्नी और चार बच्चे थे। केश्वचन्द्र सबसे बड़ा था, उससे छोटा रमेश, फिर लड़की सुधा और सबसे छोटा सुरेश। यह परिवार एक बड़े से मकान में रहता था। केशव की माँ बीमार रहती थी, इसलिए केशव की शादी जल्दी कर दी गई। इस तरह परिवार में उसकी पत्नी माधुरी भी थी। केशव बी.ए. पास नवयुवक था, परन्तु बेरोज़गार था। केशव अपनी जवानी के दिनों को याद करता है, जब उसकी नवयुवकी पत्नी बहुत चंचल एवं हंसमुख थी, वह सोचता है कि जीवन के संघर्षों ने माधुरी की चंचलता छीन ली है और अब वह बहुत चिड़चिड़ी हो गई है। जीवन के बीते दिनों को याद करता हुआ केशव उस समय को याद करता है जब परिवार में छोटी–छोटी खुशी की बातों पर दावत होती थी। सारा परिवार मिलकर प्रसन्न होता था। इसी अध्याय में केशव की बहन के विवाह की बात का प्रसंग भी है, जिसमें बाबू बांकेलाल अपने बेटे गोपीनाथ का विवाह तय करने आते हैं, जो फतेहपुर में चुंगी का इन्सपैक्टर है।

बांकेलाल पुत्र के विवाह में पाँच हज़ार का दहेज चाहते थे, परन्तु रामचन्द्र उन्हें तीन हज़ार का दहेज देना चाहते हैं। विवाह चार हज़ार के दहेज पर तय होता है। केशव याद करता है कि उसने अपने बाबू जी की चिन्ता दूर करते हुए कहा था कि वह जल्दी ही कोई नौकरी ढूंढ कर दहेज की रकम जुटा देगा, केशव को आश्चर्य होता है कि उस उम्र में उसने कितना उत्साह एवं जोश था और वह उसी दिन से नौकरी ढूंढने निकल पड़ा था। इसके विपरीत आज यह कितना थका हुआ है। उसका शरीर थक गया है, आत्मा मुरझा गई है और मन शिथिल हो चुका है।

इस अध्याय में केशव को याद आता है कि उसने कई जगह अरजियां दी और बहुत दौड़–धूप की परन्तु नौकरी नहीं मिली। कहीं पर मैनेजर के रिश्तेदार को रख लिया जाता और कहीं पर कोई और सिफारिश चल जाती। केशवचन्द्र हर रोज़ नौकरी के लिए घर से निकलता है, परन्तु उसे कहीं भी सफलता नहीं मिली। इसी बीच सुधा के ससुराल वाले तिलक की मांग करते हैं, जिसके लिए रामचन्द्र को चार हज़ार रुपया जुटाना पड़ा। सुधा के सुसराल केशवचन्द्र ही जाते हैं, जहां उसके पति को तिलक चढ़ाया जाता है। बहुत बड़ी दावत होती है। बांकेलाल के घर में सभी प्रकार की सुख–सुविधाएं हैं। वह और उनका बेटा गोपीनाथ बड़ी–बड़ी ढींगें हांकते हैं, क्योंकि उन्हें वेतन से अधिक रुपया रिश्वत द्वारा प्राप्त होता है। केशवचन्द्र को उनकी ये बातें अच्छी नहीं लगती, क्योंकि उसे रिश्वत लेना पाप लगता है। उसका मन वितृष्णा से भर उठता है और वहां से लौटते हुए वह एक निराशा का अनुभव करता है।

चौथे अध्याय में रामचन्द्र के परिवार में कुछ नयीं घटनाएं घटती हैं। केशवचन्द्र की अच्छी नौकरी लग जाती है, परन्तु घर में खर्च अधिक होने से आर्थिक स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं होता। सुधा का विवाह हो जाता है। विवाह में बहुत–सा कपड़ा–लत्ता उधार लिया जाता है। कपड़े वाला अक्सर घर पर आकर पैसा मांगता है, जिससे सभी चिन्तित हो जाते हैं। वह उधार वापिस न मिलने पर मुकद्दमा करने की धमकी भी देता है। सुरेश कॉलेज की फीस मांगता है, परन्तु घर में इसके लिए भी पैसा नहीं है। माधुरी अपनी सोने की माला बेचकर सुरेश की फीस देती है। केशव को नौकरी के लिए जो दौड़–धूप करनी पड़ी थी, उसके कारण उसे लू लग जाती है और वह कई दिनों तक बीमार भी रहता है। बीमारी और कमज़ोरी की हालत में भी उसे नई नौकरी पर जाना पड़ता है।

इस अध्याय में लेखक सुधा के परिवार का संक्षिप्त परिचय देता है। उसके ससुर एवं पति को अच्छी आमदनी है और उनका बढ़िया मकान भी है। केशव की तरक्की हो जाती है, अब तक उसका परिवार भी बड़ा हो गया है और उसके पाँच बच्चे हैं। अब उसे अपने परिवार को अच्छी तरह चलाने के लिए काफी आय मिलती है। उसका सबसे बड़ा बेटा है मोहन, जो पढ़ने लिखने में होशियार है। केशव उसे अपनी तरह मामूली कर्ल्क न बना कर बड़ा अफ़सर बनाना चाहता है। वह बी.ए. पास करने के बाद उसे आई.ए.एस. की परीक्षा में बैठाना चाहता है। इसी अध्याय में लेखक ने बिहारी लाल का परिचय दिया है, जो मोहन के लिए अपनी बेटी का रिश्ता लेकर आता है। केशवचन्द्र अपने बेटे को पढ़ाना चाहता है और अभी विवाह नहीं करना चाहता। बिहारी लाल उन्हें पाँच हज़ार दहेज देने का लालच देते हैं, इसलिए वे मान जाते हैं। मोहन का विवाह हो जाता है और केशवचन्द्र पाँच हज़ार रुपयों में एक बढ़िया मकान खरीद लेते हैं।

विवाह के बाद भी मोहन की पढ़ाई चलती रहती है। वह आई.ए.एस. की परीक्षा में बैठता है परन्तु पास नहीं होता। इसके बाद वह वकालत पास करता है और कुछ दिन वकील भी बनता है। कोई खास आमदनी न होने के कारण वह एक कम्पनी में नौकरी कर लेता है और वहाँ अस्सिटैंट मैनेजर बन जाता है। केशवचन्द्र को बहुत दुःख है कि मोहन का विवाह जल्दी कर देने से वह आई.ए.एस. की परीक्षा पास नहीं कर सका, परन्तु दूसरी तरफ इस

बात की खुशी है कि इस विवाह के फलस्वरूप आज उनका परिवार एक अच्छे और बड़े मकान में रह रहा है। वह अपने दुःख को यह सोचकर भी भुला देते हैं कि मोहन कोई मामूली बाबू नहीं, बल्कि अस्सिटैंट मैनेजर है। केशवचन्द्र का दूसरा बेटा किशन बहुत रंगीन तबीयत का व्यक्ति है। फैशन परस्त और शौकीन स्वभाव का यह नवयुवक पढ़ाई में बहुत कम ध्यान देता है। दोस्तों के साथ घूमना–फिरना, पैसा बर्बाद करना और फिल्मों पर विशेष ध्यान देना इसका स्वभाव है। कई बार फेल भी हो चुका है। केशव की एक बेटी है माया, जो पढ़ने में ठीक है परन्तु उसकी ज्यादा रुचि स्कूल में होने वाले नाटकों में है। वह भी अपने भाई किशन की तरह फिल्मों में काम करने के सपने देखती है। इसी अध्याय में लेखक ने परिवार पर आने वाली विपत्ति का संकेत दिया है, जिसमें मोहन की नौकरी छूट जाती है।

सातवें अध्याय में मोहन नौकरी की तलाश में भटकता है और कलकत्ता चला जाता है। कहीं भी नौकरी न मिलने के गम में वह सख्त बीमार पड़ जाता है। किशन हीरो बनने के सपने देखता है और बम्बई चला जाता है। वहां से वह अपने माता–पिता को पत्र लिखकर बताता है कि वह जल्द ही एक कामयाब अभिनेता बन जाएगा। केशवचन्द्र को उसकी ऐसी बातें पसन्द नहीं हैं परन्तु कभी–कभी वे सोचते हैं कि यदि किशन सफल हो जाए तो परिवार की भी कुछ मदद करेगा। सुशीला अपने पति मोहन की जी–जान से सेवा करती हैं डॉक्टर के अनुसार मोहन को टी.बी. हो गई है, जिसके लिए उसे पहाड़ी इलाके में किसी सेनिटोरियम में रखना होगा।

अष्टम अध्याय में लेखक ने एक ही घटना का उल्लेख किया है कि सुधा माया के लिए विवाह का प्रस्ताव लाती है। लड़का दुहाजू है और तीन बच्चों का बाप है, परन्तु बहुत पैसे वाला है। माया पढ़ी–लिखी समझदार नवयुवती है, वह इस रिश्ते के लिए इन्कार कर देती है। माता–पिता के समझाने पर भी वह राज़ी नहीं होती।

मोहन की बीमारी बढ़ती जाती है। सुशीला उसे किसी सेनीटोरियम में नहीं रखना चाहती और उसके इलाज के लिए घर में पैसा नहीं है। वह अपने सारे ज़ेवर बेच कर मोहन को अल्मोड़ा ले जाती है। वह अपने ससुर को कहती है कि वह अपनी सेवा से मोहन को ज़रूर बचा लेगी। अल्मोड़ा जाकर मोहन स्वस्थ होने लगता है।

इस अध्याय में लेखक ने अल्मोड़ा के पहाड़ी क्षेत्र का वर्णन किया है, जहां के ठण्डे वातावरण में मोहन ठीक होने लगता है। केशव चन्द्र को इस बात पर बड़ा गर्व है कि उसकी बहु सुशीला ने त्याग एवं सेवा भाव से उनके बेटे की जान बचा ली है।

इस अध्याय में माया अपनी एक सहेली रानी के साथ किशन के पास बम्बई चली जाती है। यह दोनों घर में बिना बताए गई थी, जिससे केशवचन्द्र बहुत नाराज़ होते हैं। सुशीला काफी लम्बे समय तक मोहन को अल्मोड़ा में रखती है, किन्तु वर्षा आरम्भ होने के कारण उसे वापिस कानपुर आना पड़ता है। अब तक उसके पास रुपए भी नहीं बचते। डॉक्टर मोहन का इलाज एक महीना और चलाने की सलाह देता है, परन्तु केशवचन्द्र के पास रुपए नहीं हैं। किशन बम्बई में अच्छा कारोबार चला लेता है और हीरो बनकर रुपया भी कमाता है, परन्तु पिता की कोई मदद नहीं करता। केशवचन्द्र जिस कम्पनी में काम करते हैं, वहाँ के मालिक को उनकी ईमानदारी पर बहुत भरोसा है। केशवचन्द्र उस कम्पनी के लिए माल की खरीदारी करते हैं और हर काम पूरी ईमानदारी से करते हैं। उस कम्पनी में माल देने वाला एक व्यापारी राम किशोर यह जानता है कि केशव को मोहन की बीमारी के लिए रुपया चाहिए। इसलिए वह घटिया माल देकर केशवचन्द्र द्वारा पास करवाना चाहता है। इसके लिए वह उन्हें एक हज़ार रुपया रिश्वत देता है। केशवचन्द्र परिस्थितियों से विवश होकर यह रुपया ले लेते हैं, परन्तु उसे खर्च नहीं कर पाते। उन्हें लगता है कि रिश्वत लेकर उन्होंने महा पाप किया है। उनके मन पर इतना बोझ पड़ जाता है कि वह दिन–रात बेचैन रहने लगते हैं।

केशवचन्द्र इतने अधिक चिन्तित रहने लगते हैं कि उनकी भूख–प्यास और नींद खत्म हो जाती है। एक दिन उनकी कम्पनी का मालिक उन्हें एक अन्य कर्मचारी रामअधार के बारे में बताता है कि वह लोगों से रिश्वत लेकर हेरा–फेरी करता है। वह केशवचन्द्र को इस बारे में पूछताछ करने को कहता है किन्तु केशवचन्द्र पूरे विश्वास के साथ रामअधार के निर्दोष होने का समर्थन करता है। उसके मन पर इस बात का बोझ निरन्तर बढ़ता जाता है कि उसने अपने मालिक के साथ विश्वासघात किया है और वह उन रुपयों को खर्च नहीं कर पाता। इसी बीच रामअधार केशवचन्द्र के पास आता है और उसे बताता है कि उसने रामकिशोर से अपने सारे सम्बन्ध तोड़ दिए हैं क्योंकि वह उसे रिश्वत देना चाहता था। वह यह भी बताता है कि रामकिशोर का यह कहना भी उसे बुरा लगा कि बाबू केशवचन्द्र भी रिश्वत लेते हैं। रामअधार की बात सुनकर केश्व सन्नाटे में आ जाता है। अपनी बेचैनी को दूर करने के लिए वह अलमारी में से एक हज़ार रुपया निकाल कर अपने मालिक के सामने रख देता है। वह यह मान लेता है कि उसने रिश्वत ली है और इस पाप के लिए वह कोई भी सज़ा भुगतने को तैयार है।

मालिक केशवचन्द्र की बात सुन हैरान रह जाता है। वह कहता है कि इन रुपयों को कम्पनी के किसी हिसाब में नहीं डाला जा सकता। वह केशवचन्द्र से इस गल्ती का प्रायश्चित करने के लिए नौकरी–से त्याग–पत्र देने को कहता है। केशवचन्द्र त्याग–पत्र दे देते हैं और घर की तरफ चल पड़ते हैं। रास्ते भर वह सोचते हैं कि इन रुपयों का वे क्या करेंगे, रास्ते में एक अनाथालय आता है, वहाँ वह रुपए दान करना चाहते हैं। सोच–विचार में डूबे वे घर आते हैं, वो स्वयं को दोषी मानते हैं। उनके मन में विचार आता है कि उनकी बहू सुशीला उनसे कहीं महान् है, जिसने अपने ज़ेवर बेचकर अपने पति की जान बचाई। अब वह एक बच्चे को ट्यूशन पढ़ा कर जो कुछ कमाती है, वह भी पति की सेवा में खर्च करती है। उसके मन पर कोई बोझ नहीं है क्योंकि उसने कभी पाप की कमाई नहीं की। थके पांवों और टूटे मन से केशवचन्द्र घर पहुंच कर दीवान पर लेट जाते हैं। इतने में पोस्टमैन एक रजिस्ट्री लेकर आता है, जिसमें किशन और माया उन्हें पन्द्रह सौ रुपए भेजते हैं। केशवचन्द्र बहुत प्रसन्न होता है। उनका मन हल्का हो जाता है, परन्तु उन्हें लगता है कि उनके पैर अभी भी लड़खड़ा रहे हैं और वे थके पांवों से आगे बढ़ रहे हैं।

2.2.3 कथावस्तु की समीक्षा

इस उपन्यास की कथावस्तु बड़े सहज एवं स्वाभाविक ढंग से आरम्भ होकर विकसित होती है। इसमें एक परिवार के प्रमुख सदस्य केशवचन्द्र की यौवन से बुढ़ापे तक की कहानी है। यह एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें एक परिवार के सुख–दुःख की गाथा को बड़े स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है। केशवचन्द्र जीवन के विभिन्न संघर्षों में से गुजरते हुए बूढ़े हो गए हैं। जीवन यात्रा में चलते–चलते उनके पैर थक गए हैं और वह स्वयं को थके–टूटे हुए अनुभव करते हैं। केशवचन्द्र एक आदर्श व्यक्ति हैं। उन्होंने अपना जीवन आदर्शों एवं नियमों का पालन करते हुए बिताया है। उन्हें आर्थिक तंगियां सहन करनी पड़ी परन्तु वे अपने असूलों को नहीं छोड़ सके।

लेखक ने इस उपन्यास में जिन घटनाओं का वर्णन किया है, वे सामान्य जीवन की साधारण और यथार्थ घटनाएं हैं। इसमें कुछ भी काल्पनिक नहीं है। उपन्यास की रचना लेखक ने बड़े मनोयोग से की है और बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की गाथा कही है। उपन्यास की कथावस्तु का सम्बन्ध उस समय से है, जब चालीस–पचास रुपए आय वाली नौकरी को बहुत बड़ी समझा जाता था और जब पाँच हज़ार दहेज देने से अच्छे घरों में बच्चों की शादी हो जाती थी। पाँच हज़ार में बढ़िया मकान खरीदा जा सकता था। एक हज़ार रुपए की रिश्वत बहुत बड़ी रकम समझी जाती थी। इसके साथ ही लेखक ने आज से साठ–सत्तर वर्ष पहले की सामाजिक मान्यताओं का वर्णन भी किया है। सुशीला एवं माधुरी जैसी स्त्रियों के माध्यम से एक भारतीय

आदर्श पत्नी का चित्रण भी किया है, जो परिवार के सुख में अपना सुख मानती है और पति की सेवा के लिए सर्वस्व त्याग सकती हैं।

'थके पांव' उपन्यास पूर्व दीष्टि (फलैश बैक) पद्धति में लिखा गया है। पहले अध्याय में केशवचन्द्र एक बूढ़े के रूप में आया है, जो जीवन पर्यन्त चलते–चलते थक गया है और उसके पैर दर्द एवं थकान से लड़खड़ा गए हैं। दीवान पर लेटा हुआ वह अपनी बीती ज़िन्दगी को याद करता है। उसका पूरा जीवन एक रील की तरह उसकी आँखों के सामने से गुजरता है, जिससे उपन्यास की कथावस्तु विकसित होती है। अन्तिम अध्याय केशवचन्द्र की वर्तमान ज़िन्दगी से जुड़ जाता है, जब वह उठकर अनाथालय की ओर बढ़ता है। सारी कथा मुख्य पात्र केशवचन्द्र के मुख से कही गई जान पड़ती है। लेखक ने बड़े स्वाभाविक ढंग से केशवचन्द्र के जीवन की गाथा को प्रस्तुत करते हुए इस यथार्थवादी उपन्यास की रचना की है।

2.2.3.1 स्वयं जांच अभ्यास

1. केशवचन्द्र के पिता का क्या नाम था? वे क्या काम करते थे?

.....

.....

.....

2.2.4 सारांश

'थके पांव' भगवती चरण वर्मा की एक सुन्दर कृति है, जिसमें एक साधारण व्यक्ति के जीवन की कहानी अत्यन्त स्वाभाविक एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई है। इस कथा के माध्यम से लेखक ने जीवन के एक सत्य का प्रतिपादन किया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में विभिन्न परिस्थितियों में से गुज़रता है। अपने यौवन काल में वह दौड़–धूप करने में सक्ष्म होता है और कभी थकता नहीं है। ज्यों–ज्यों आयु बढ़ती है, मनुष्य में साहस एवं इच्छाएं कम होती जाती हैं और शरीर में बल कम होने लगता है। जीवन यात्रा के लम्बे रास्ते तय करता व्यक्ति सुख–दुख के विभिन्न पड़ावों को पार करता हुआ अन्त में बहुत थक जाता है। उसके मन की खुशी समाप्त होने लगती है और वह स्वयं को थका हारा एवं टूटा हुआ महसूस करता है। इस सत्य का उद्घाटन करते हुए लेखक ने बड़ी स्वाभाविक भावपूर्ण एवं प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास आज से साठ–सत्तर वर्ष पहले के भारतीय परिवारों की झांकी प्रस्तुत करता है, जिसमें लोग कुछ जीवन मूल्यों को लेकर जीवन जीते थे और साधारण जीवन व्यतीत करते हुए पाप–पुण्य में विश्वास रखते थे। मुख्य रूप से लेखक का उद्देश्य यह स्पष्ट करता है कि समय एवं परिस्थिति के अनुसार मनुष्य के जीवन में विभिन्न परिवर्तन आते हैं। जीवन के लम्बी राह का पथिक मनुष्य अपने अन्तिम दिनों में थक कर लड़खड़ा जाता है। इसी मुख्य भाव के आधार पर लेखक ने इस उपन्यास का नामकरण किया है, जो अत्यन्त स्वाभाविक और सटीक है।

2.2.5 प्रश्नावली

1. केशवचन्द्र को नौकरी ढूंढते समय किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा ?
2. केश्वचन्द्र के पिता ने उनका विवाह जल्दी क्यों किया?
3. केशवचन्द्र की पत्नी का क्या नाम था?
4. सुधा कौन थी? उसका विवाह किसके साथ हुआ?

5. मोहन उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी बड़ा अफ़सर क्यों नहीं बन सका?
6. मोहन की बीमारी का क्या कारण था?
7. सुशीला ने मोहन की किस प्रकार सेवा की?
8. केशवचन्द्र रिश्वत क्यों नहीं लेना चाहते थे?
9. केशवचन्द्र ने रिश्वत लेने के पाप का प्रायश्चित किस प्रकार किया?

2.2.6 सहायक पुस्तकें

1. साहित्यालोचन – श्याम सुन्दर दास
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र

पाठ संख्या : 2.3 लेखिका : डॉ. हरिसिमरन कौर

'थके पांव' चरित्र-चित्रण

रूप-रेखा

2.3.0 उद्देश्य
2.3.1 प्रस्तावना
2.3.2 'थके पांव' उपन्यास में चरित्र–चित्रण
2.3.2.1 स्वयं जांच अभ्यास
2.3.3 सारांश
2.3.4 प्रश्नावली
2.3.5 सहायक पुस्तकें

2.3.0 उद्देश्य

इस पाठ में 'थके पांव' उपन्यास में आए पात्रों का चरित्र–चित्रण करेंगे। उपन्यास की कथावस्तु मुख्य पात्र केशवचन्द्र के जीवन से सम्बन्धित है, किन्तु अन्य पात्र भी अपना महत्त्व रखते हैं। केशवचन्द्र के परिवार एवं उसकी विभिन्न गतिविधियों का चित्रण करते हुए लेखक ने अन्य पात्रों को भी प्रस्तुत किया है। इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- केशवचन्द्र के चरित्र के विशेष गुणों से परिचित हो सकेंगे;
- केशवचन्द्र के परिवार के सदस्यों के चारित्रिक गुणों से परिचित हो सकेंगे;
- भारतीय समाज के मध्यवर्गीय पात्रों के चरित्र की विशिष्टताओं को जान सकेंगे;
- उपन्यास में आए पात्रों के माध्यम से मानव स्वभाव की दुर्बलताओं से भी परिचित हो पाएंगे।

2.3.1 प्रस्तावना

प्रत्येक मनुष्य के स्वभाव में कुछ गुण एवं कुछ दुर्बलताएं पाई जाती हैं, जिनके आधार पर उसका चरित्र बनता है। किसी कहानी या उपन्यास में आए पात्रों का अपना एक विशिष्ट स्वरूप होता है। यह स्वरूप उन्हें एक दूसरे से भिन्न करता है। 'थके पांव' उपन्यास में लेखक ने एक मध्यवर्गीय परिवार की साधारण–सी ज़िन्दगी का वर्णन करते हुए लगभग बीस पात्रों का परिचय दिया है। इनमें से केशवचन्द्र, मोहन, किशन, माधुरी और सुशीला प्रमुख पात्र कहे जा सकते हैं। शेष सभी पात्र गौण हैं। मुख्य पात्रों के चरित्र का विश्लेषण यहाँ किया जाएगा।

2.3.2 'थके पांव' उपन्यास में चरित्र-चित्रण

उपन्यास में कई पात्र हैं, जिनमें प्रमुख हैं बाबू केशवचन्द्र। सबसे पहले हम उनके चरित्र का विश्लेषण करेंगे।

I. केशवचन्द्र

केशवचन्द्र 'थके पांव' उपन्यास के केन्द्रिय पात्र हैं और उपन्यास की कथावस्तु उन्हीं के जीवन पर आधारित है। केशव अपने बीते हुए समय को याद करते हैं और उसके वर्णन में अन्य पात्र केशव के व्यक्तित्व को पुष्ट करते हैं। लेखक ने केशव को एक साधारण एवं सहज मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे और पले केशव के चरित्र में गुण एवं दोष दोनों ही हैं। वह अपनी कमज़ोरियों से लड़ता है और उनसे सीखता है। वह गल्तियां भी करता है, परन्तु साथ ही अपने आदर्शों की ओर उन्मुख रहता है। केशव के चरित्र के गुणों का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है :

1. उच्च आदर्शों का समर्थक :- केशव एक अच्छे परिवार का व्यक्ति है, जिसके पिता रामचन्द्र सदा सत्य और ईमानदारी की राह पर चले। वह अपने पिता को याद करते हुए उनके बताए आदर्शों पर चलने के लिए तत्पर है। झूठ बोलना, चोरी करना, रिश्वत लेना एवं रिश्वत के पैसे से अपनी अमीरी का प्रदर्शन उसे पसन्द नहीं है। एक मामूली से कल्र्क की नौकरी करके उसने अपने परिवार का पालन पोषण किया परन्तु कभी भी रिश्वत नहीं ली। अपनी युवावस्था में पढ़ाई करने के बाद उसे बहुत दौड़–धूप करके नौकरी ढूंढनी पड़ी। इसी दौरान उसने दफ्तरों में होने वाले भ्रष्टाचार को अपनी आँखों से देखा और उसके प्रति वितृष्णा जाहिर की। अपनी बहन के ससुराल वालों को वह इसलिए पसन्द नहीं करता क्योंकि वे लोग रिश्वत के पैसे से अमीर हैं। उनकी अभिमान भरी बातें उसे निराश करती हैं। उसका यह आदर्श है कि रिश्वत पाप की कमाई है, उपन्यास के अन्त में भी स्पष्ट होता है कि जब वह बहुत मज़बूरी की हालत में एक हज़ार रुपए रिश्वत लेता है तो इस पैसे को भी वह खर्च नहीं कर पाता। यह दुष्कर्म उसके लिए बोझ बन जाता है और वह बार–बार स्वयं को धिकारता है। अन्त में वह इन रुपयों को एक अनाथालय में दान कर देता है।

2. सादा स्वभाव :- केशव बड़े सादे स्वभाव के व्यक्ति हैं। वह अपने परिवार के साथ बड़े साधारण ढंग से रहते हैं। उन्हें अपने माता–पिता से स्नेह है। माँ की बीमारी को देखकर वह माधुरी से विवाह कर लेते हैं। वह जो कुछ कमाते हैं, उसे भाई बहनों व परिवार पर खर्च कर देते हैं। रूखी–सूखी खाकर ईश्वर में श्रद्धा एवं विश्वास रखने वाले केशवचन्द्र में आत्म–संतोष एवं सब्र है। उपन्यास की कथा वस्तु में वह कहीं भी कोई इच्छा प्रकट नहीं करते। जो कुछ उनके पास है, उसी में वे खुश है। जब उनका बेटा किशन बम्बई जाकर हीरो बनता है और उन्हें अपनी कोठी, गाड़ी, कीमती वस्त्र एवं अन्य ऐश्वर्य की वस्तुओं के बारे में बताता है तो वे सोचते हैं कि इन चीजों पर पैसा खर्च करने की उपेक्षा यदि वह अपने परिवार की आवश्यकताएं पूरी करता तो अधिक अच्छा होता। केशव परिवार के मुखिया हैं। उपन्यास की कथावस्तु से स्पष्ट होता है कि मुखिया होने के बाद भी वे परिवार के किसी सदस्य से बुरा व्यवहार नहीं करते। किशन के बम्बई जाने पर वे नाराज़ होते हैं, परन्तु जब वह उनसे मिलने आता है तो प्रसन्न हो जाते हैं।

केशव स्वभाव के विनम्र एवं दयालु हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति सहानुभूति एवं प्रेम रखना उनका स्वभाव है। पत्नी से भी उन्हें स्नेह है। वे जानते हैं कि उनकी पत्नी माधुरी उनके परिवार की शुभचिन्तक है। कठिनाई के दिनों में वह उनकी सहायता करती है। इस बात पर सदा उन्हें खुशी का अनुभव होता है। पुत्र मोहन की बीमारी की वे बहुत चिन्ता करते हैं और अपनी पुत्रवधू सुशीला के त्याग एवं सेवा–भाव की सराहना करते हैं।

3. मेहनती एवं ईमानदार :- केशव स्वभाव से मेहनती हैं। वे अपनी नौकरी बड़ी मेहनत एवं ईमानदारी से करते हैं। उनकी कम्पनी का मालिक एवं सभी कर्मचारी केशव का इसलिए सम्मान करते हैं कि वे भरोसेमन्द व नेक कर्मचारी हैं। समय पर दफ्तर पहुंचना और सबसे बाद दफ्तर से जाना उनका स्वभाव है। यही कारण

है कि उन्हें दफ्तर में बहुत जल्दी तरक्की भी मिली है। कम्पनी में काम करने वाला उनका एक सहयोगी उनके बारे में कहता है – जी! नमकहलाली का सबक अगर किसी ने लेना हो तो बाबू केशवचन्द्र साहब से ले। ....बाबू केशवचन्द्र एक–एक कागज़ उलट–पुलट कर देखेंगे, बाल की खाल निकालेंगे। एक अन्य कर्मचारी केशवचन्द्र से कहता है – "आप जैसे आदमी का सुमार भी वह बेईमानों में करें..... ऐसे आदमी के यहाँ काम करना पाप है।" केशवचन्द्र अपनी पूरी आयु बड़ी समझदारी एवं कड़ी मेहनत करके अपने परिवार को पालते रहे।

4. समझदार :- केशव काफी समझदार व्यक्ति हैं। परिस्थितियों के अनुसार फैसला लेना उनके स्वभाव की विशेषता है। वह अपने बेटे का विवाह जल्दी न करके उसे पढ़ाकर बड़ा अफसर बनाना चाहता है। बिहारीलाल अपनी बेटी का विवाह मोहन से करना चाहते हैं और दहेज में पाँच हज़ार रुपया देना चाहते हैं। यह जानकर केशव मोहन के विवाह के लिए राज़ी हो जाते हैं। यह फैसला वे परिवार की भलाई के लिए करते हैं और पाँच हज़ार रुपए से एक बढ़िया मकान खरीदते हैं।

5. गल्ती पर पछताने वाला :- उपन्यास की कथावस्तु में केशव ने अपना जीवन अत्यन्त साधारण तरीके से व्यतीत किया है और आदर्शों का त्याग नहीं किया। कथा के अन्त में वे परिस्थितियों से मज़बूर होकर केवल एक बार रिश्वत लेते हैं जो उनके लिए बोझ बन जाती है। वे बार–बार स्वयं को कोसते हैं। उनकी अन्तरात्मा से आवाज़ उठती है और वह यह रुपया अनाथालय में देना चाहते हैं – "उसके अन्दर से किसी ने कहा – यह पाप का रुपया तुम यहाँ दे दो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।" इस बात से स्पष्ट है कि केशव का चरित्र बहुत महान् है क्योंकि वह कोई भी गल्त काम करके उसके लिए पछताता है और उसका प्रायश्चित भी करता है।

II. रामचन्द्र

रामचन्द्र केशव के पिता हैं, जो एक कम्पनी में बाबू (कर्ल्क) की नौकरी करते थे। उन्हें केवल पचास रुपए वेतन मिलता था। केशव अपने बीते जीवन को याद करते हुए पिता का परिचय इस प्रकार देता है – "उसके पिता का नाम रामचन्द्र था और वह कानपुर की एंड्रज कम्पनी में छोटे बाबू थे। छोटे बाबू से मतलब साधारण कर्ल्क से था, जो सुबह से शाम तक लाखों–करोड़ों रुपयों के कारोबार में हिस्सा बांटता था, यानी उनके कागज़ रखता था, उनका हिसाब रखता था, उस सम्बन्ध में चिट्ठी–पत्री लिखता था लेकिन जिसे महीने के अन्त में पचास रुपए मिलते थे। उन दिनों पचास रुपए में गृहस्थी बड़े मजे से चलती थी, लड़कों की पढ़ाई–लिखाई होती थी, दावतें–तवाज़े भी हो जाया करते थे।" रामचन्द्र के चरित्र की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं :

1. सदगुणों वाले :- रामचन्द्र अत्यन्त शान्त, संयत एवं आचार–विचार के प्रति आस्था रखने वाले व्यक्ति हैं। उनका जीवन बहुत सादा है। सुबह दफ्तर जाना, शाम को लौटकर अपने बाल–बच्चों में जी बहलाना उनका स्वभाव है। उनमें दया, सहानुभूति एवं संवेदना के भाव पर्याप्त मात्रा में थे। वह अच्छी तरह रहने, अच्छा खाना–खाने और अपनी सन्तान को सुखी एवं समृद्ध देखने में विश्वास रखते हैं। हर परिस्थिति में खुश रहना रामचन्द्र का स्वभाव है।

2. चंचल स्वभाव :- बाबू रामचन्द्र स्वभाव के चंचल हैं। घर में छोटी–छोटी बातों में मित्रों को दावत देना उनका स्वभाव है। दफ्तर में काम करने वाले सहयोगियों को बुलाकर खिलाना–पिलाना उन्हें रूचिकर लगता है। पत्नी द्वारा विरोध करने पर भी वे मानते नहीं हैं।

3. समझदार :- रामचन्द्र दुनियादारी के मामलों में समझदार हैं। वह अपनी बेटी सुधा के विवाह में तीन हज़ार का दहेज देना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें अपने बेटे केशव के विवाह में इतना ही दहेज मिला था। सुधा के ससुराल वालों से वे चार हज़ार का दहेज तय करते हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में वे लोग–हैसियत वाले हैं। केशव द्वारा विरोध करने पर कि वे लोग हैसियत वाले रिश्वत के पैसे से बने हैं, वे उसे समझाते हैं – "तुम नहीं समझोगे केशव, अभी नौजवान हो, ज़िन्दगी की ठोकरें नहीं खाई हैं।" केशव उनसे कहता है कि वह रुपयों का प्रबन्ध करेगा। यह सुनकर वह गद्‌गद् हो उठते हैं – शाबास बेटा, तुम से मुझे बड़ी उम्मीदें हैं, उन्हीं उम्मीदों के साथ मैंने तुम्हें पढ़ाया–लिखाया है।"

4. आदर्श व्यक्ति :- बाबू रामचन्द्र आदर्श गृहस्थी हैं। वे अपने पिता का श्राद्ध बढ़ी श्रद्धा से करते हैं और ब्राह्मण भोजन करवाते हैं। वे एक अच्छे पति भी हैं और पत्नी के साथ उनके अच्छे सम्बन्ध हैं। रामचन्द्र एक अच्छे पिता हैं। उन्हें अपनी संतान के पालन–पोषण का बहुत ध्यान है, बेटी के विवाह की चिन्ता है और लड़कों को पढ़ा कर ऑफिसर बनाना चाहते हैं। बेटे को सुधा के ससुराल तिलक देकर भेजते हुए वे उसे समझाते हैं कि वहां जाकर बहन के घर का कुछ ना खाए – "उनके घर का पानी न पीना, न खाना खाना। तिलक लगाकर सीधे स्टेशन चले आना, वहीं सो रहना और खाना किसी हलवाई की दुकान पर खा लेना। .....कितना भी इसरार करें खाना किसी हालत में भी न खाना वहाँ पर। वैसे जमाना बदल रहा है, पर जब तक निभता चले निभाए जाना चाहिए; क्यों किसी को उंगली उठाने का मौका दिया जाए।"

III. माधुरी

माधुरी केशवचन्द्र की पत्नी है, जो बड़ी छोटी आयु में केशव के साथ ब्याह दी गई है। वह घर का सारा काम–काज करती है, क्योंकि केशव की माँ बीमार रहती है। केशव अपने बीते समय को याद करता माधुरी के साथ व्यतीत किए जीवन को भी याद करता है। उसे अपनी युवावस्था के दिन याद आते हैं – "विवाह हुए करीब तीस–बत्तीस वर्ष हो चुके, पर माधुरी से प्रथम मिलन की याद उसे अवश्य है .....किशोरावस्था, कौतूहल और युवावस्था का वसा" माधुरी के चारित्रिक गुणों को इस प्रकार आंका जा सकता है :–

1. सुन्दर आकर्षक युवती :- माधुरी अपनी युवावस्था में सुन्दर एवं आकर्षक युवती थी। जिसके विषय में लेखक ने कहा है – "एक समय वह युवा थी, उसमें आकर्षण था, उसमें रस था और इस सबके साथ उसके अन्दर भोलेपन से भरा हुआ एक विश्वास था। विश्वास आज भी माधुरी में है, लेकिन भोलापन गायब हो गया है । उसे देवता पर विश्वास है, उसे अपने पति पर विश्वास है, उसे अपनी संतान पर विश्वास है और इसी विश्वास के सहारे वह जिन्दा है।"

2. धार्मिक विचारों वाली स्त्री :- माधुरी ईश्वर में अखण्ड विश्वास रखती है और पूजा–पाठ करती है। वह नियमपूर्वक पूजा करती है और समझती है कि देवी–देवता उसे सहारा दे सकते हैं। वह हनुमान जी की भक्त है। हनुमान चालिसा का पाठ करती है और उनके मंदिर में प्रसाद चढ़ाती है। अपने हाथ से बेसन के लड्डू बनाकर मंदिर में प्रसाद चढ़ाने जाती है।

3. पतिव्रता :- माधुरी केशव को पति परमेश्वर मानती है और उसकी तथा उसके परिवार की सेवा बड़े त्याग भाव से करती है। जब भी केशव किसी कष्ट में होता है, अपनी जमा पूंजी लाकर उसके सामने रख देती है। सुधा के विवाह के समय संकट आने पर वह अपने पास रखे दो सौ रुपए ला कर देती है – "मेरे लाला जी ने मुझे चुपके से दो सौ रुपए दिए थे, कहा था किसी से न बताना, सो वह मेरे पास हैं। मुसीबत का समय है, इसलिए तुम्हें बता दिया।" केशव बहुत प्रसन्न होता है और कहता है – "मधो, तुम स्त्री नहीं,

देवी हो।" इस तरह एक बार केशव के छोटे भाई सुरेश के पास कालेज की फीस देने के लिए पैसे नहीं होते तो माधुरी अपनी सोने की माला बेच कर उसे फीस के रुपए देती है। यह सब कुछ वह इसलिए करती है कि उसका पति केशव बेरोज़गार होने के कारण अपने पिता की कोई मदद नहीं कर सकता।

4. अच्छी माँ :- माधुरी पांच बच्चों की माँ है। उसे पुत्रों से बहुत स्नेह है। मोहन पढ़ाई में बहुत होशियार है यह जानकर वह बहुत प्रसन्न होती है। वह उसका विवाह बड़ी धूम–धाम से करती है और उसे अपनी कुल–लक्ष्मी बहू पर गर्व है। उसका दूसरा बेटा किशन पढ़ाई में नालायक है और दो बार इन्टर में तथा एक बार बी.ए. में फेल हो चुका है। किशन के पिता और भाई उसे बार–बार प्रताड़ित करते रहते हैं, परन्तु माधुरी सदा उसका पक्षपात करती है। वह उसका लाडला बेटा है और वह उसकी किसी बुराई की तरफ ध्यान नहीं देती। जब किश्न दूसरी बार बी.ए. की परीक्षा में फेल होता है तो वह कहती है – "हाय राम! इस दफ़ा भी फेल हो गया, इस दफ़ा तो बड़ी मेहनत की थी बेचारे ने, दिन रात पढ़ता ही रहता था! नाश हो इन इम्तहान लेने वालों का, बड़े बेईमान हैं।" जब किशन बम्बई से कुछ रुपये मंगवाता है और यह लिखता है कि उसकी जेब कट गई है तब भी माधुरी कहती है – "नाश हो इन गिरहकटों का। बड़ी मुसीबत में पड़ा होगा। अपना ही लड़का है, कोई गैर थोड़े ही है। रुपयों का कुछ न कुछ इंतजाम तो करना ही होगा।" वह अपने सभी बच्चों से प्रेम करती है। माया तथा कम्मो की भावनाओं का ध्यान करती है और बहू सुशीला के प्रति भी स्नेह भाव रखती है। जब मोहन की नौकरी छूट जाती है तो वह कलकत्ता जाकर नौकरी नहीं करने देती। उसे विश्वास है कि मोहन को कानपुर में ही नौकरी मिल जाएगी। जब माया किशन के पास बम्बई चली जाती है तो केशवचन्द्र बहुत नाराज़ होते हैं। वे माया को समझा–बुझा कर वापिस नहीं लाना चाहते तो माधुरी उनसे कहती है – "माया डूब रही है, तुम उसके बाप हो, उसे बचाना तुम्हारा धर्म है – उसे वापिस ले आओ, माया को बचाओ।"

इसी तरह जब बाबू केशवचन्द्र अपनी बेटी माया का विवाह तीन बच्चों के बाप एक दूहाजू से करने को तैयार हो जाते हैं, तो वह इस बात का विरोध करती है – "न भाई ! एक तो लड़का दुहाजू है, फिर उसके तीन बच्चे, सौत के बच्चों को संभालना बड़ा मुश्किल होता है, बदनामी ही हाथ लगती है। माया के लिए कोई दूसरा लड़का ढूंढो।" उसे अपने बच्चों से प्रेम है। मोहन के बीमार होने पर वह अपने सौ रुपये निकाल कर दे देती है जो उसने श्रावण में मथुरा जाने के लिए संभाल कर रखे हुए थे। अपनी बहू का सेवा भाव देखकर वह प्रसन्न हो जाती है। मोहन के ठीक होने पर वह कहती है – "देख माया, बहू ने कितनी सेवा की मेरे मोहन की। उसकी ही हिम्मत थी कि मोहन की इतनी अच्छी देख–रेख हुई..... देख माया सुशीला की तरह सुगृहणी और कुल लक्ष्मी बनो।

IV. मोहन

मोहन केशवचन्द्र का सबसे बड़ा बेटा है। इसके चरित्र की विशिष्टताओं को इस प्रकार आंका जा सकता है:

1. पढ़ाई में होशियार :- मोहन मेहनती विद्यार्थी है। वह बी.ए. पास करके पी.सी.एस. की परीक्षा में बैठता है और अड़तासीवें नम्बर पर आता है। इसके बाद वह वकालत पास करता है। इस कथा का सम्बन्ध जिस समय से है, उस समय इतनी पढ़ाई करने वाले व्यक्ति विरले ही होते थे।

2. आज्ञाकारी पुत्र :- मोहन अपने माता–पिता का बहुत आदर करता है। पिता की हर आज्ञा को चुपचाप मान लेना अपना धर्म समझता है। पढ़ाई में होशियार होने के कारण वह ऊँची शिक्षा प्राप्त करके बड़ा ऑफिसर बन सकता था, परन्तु पिता के कहने पर वह पढ़ाई के बीच में ही विवाह के लिए राज़ी हो गया।

उसने चाहकर भी पिता का विरोध नहीं किया। यदि वह विवाह के झमेले में पड़कर अपना समय बर्बाद न करता तो पी.सी.एस. पास करके किसी बड़े पद का अधिकारी बन जाता।

3. सीधे स्वभाव वाला :- मोहन स्वभाव से बहुत सीधा है। उसमें लड़कों वाली चंचलता और शरारत बिल्कुल नहीं है। लेखक ने मोहन के विषय में लिखा है – "मोहन अत्याधिक सीधा, अत्याधिक विनयी, अत्याधिक ईमानदार है। मोहन जैसे आदमी जीवन में बहुत कम सफल होते हैं।" वकालत पास करके वह वकील बन गया परन्तु उसकी वकालत चल नहीं पायी क्योंकि इस पेशे के लिए जितनी होशियारी की ज़रूरत होती है वह उसके पास नहीं थी।

4. असफल व्यक्ति :- अपने सीधेपन के कारण मोहन जीवन भर असफल रहा। पहले वह वकालत नहीं चला पाया। इसके बाद वह एक कम्पनी में बड़ा बाबू बन गया परन्तु बहुत जल्दी ही उसे वहाँ से भी नोटिस मिल गया। इसके बाद बहुत भाग–दौड़ करने पर भी उसे कोई काम नहीं मिल सका। उसके भाग्य ने कभी उसका साथ नहीं दिया। इस स्थिति में वह इतना गमहीन हो जाता है कि बीमार रहने लगता है और उसे टी.बी. जैसी बीमारी हो जाती है।

V. सुशीला

सुशीला मोहन की पत्नी है। वह सही अर्थों में एक भारतीय पतिव्रता स्त्री है। इसके चरित्र की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं :

1. पतिव्रता स्त्री :- सुशीला आदर्श भारतीय नारी है, जो अपने पति और उसके परिवार की त्याग भाव से सेवा करती है। ज़रूरत पड़ने पर वह घर के सदस्यों की आवश्यकतानुसार मदद भी करती रहती है।

वह अच्छे परिवार की बेटी है और उसके पिता ने पाँच हज़ार का दहेज देकर उसका विवाह किया है। ससुराल आकर वह अच्छे कपड़े और खाने को भी तरसती है, परन्तु कभी मुँह से नहीं कहती। वह जानती है कि उसका बेरोज़गार पति और वह स्वयं परिवार पर एक बोझ है, इसलिए वह जितना हो सके सेवा–भाव से काम करती है।

2. समझदार :- सुशीला पढ़ी–लिखी समझदार स्त्री है। पति के बीमार होने पर वह अपने सास–ससुर से कहती है कि वे सारी बात उस पर छोड़ दें। वह स्वयं मोहन का अच्छा इलाज करवाएगी। घर में रुपयों की कमी है; इसलिए वह किसी के सामने हाथ न फैलाकर अपने सारे जेवर बेच देती है। वह स्कूल में अध्यापिका की नौकरी करके मोहन का हाथ बंटाना चाहती है, परन्तु मोहन इसका विरोध करता है। सुशीला उसे समझाती है – "मैं कहती हूं कि इसमें हर्ज ही क्या है? आजकल स्त्रियां नौकरी करती हैं, रुपया कमाती हैं, आर्थिक संघर्ष में परिवार का हाथ बंटाती हैं। तुम अपनी नौकरी छोड़ आराम करो और इसी बीच में कोई अच्छी नौकरी ढूंढो। जब तुम आर्थिक दृष्टि से सुव्यवस्थित हो जाओगे तब मैं यह नौकरी छोड़ दूंगी।" जब डॉक्टर बताता है कि मोहन को टी.बी. हो गई है तो उसके पिता कहते हैं कि घर में राजरोग आ गया है, अब भगवान् ही मालिक है। सुशीला उत्तर में कहती है – "बाबू जी, भगवान् पर सब कुछ छोड़ने से तो काम नहीं चलता। डॉक्टर साहब कह गए हैं कि इलाज से बीमारी अच्छी हो जाएगी, आदमी के हाथ में इलाज करना है।" डॉक्टर मोहन को किसी सरकारी सेनीटोरियम में रखने की सलाह देता है। मोहन के माता–पिता भी इस बात के लिए राज़ी होते हैं, क्योंकि प्राईवेट इलाज पर तो हज़ारों रुपये खर्च होने की संभावना है। इस स्थिति में सुशीला समझदारी से काम लेती है और अपने गहने सास के सामने रख कर कहती है – "अम्मा जी यह सेनीटोरियम में किसी हालत में नहीं रहेंगे। जहां तक इनके इलाज का सवाल या इलाज पर होने

वाले खर्च का सवाल है तो यह मेरे गहनों का डिब्बा है। बाबू जी गहना चाहे बेच दें – मेरे पिता जी का कहना है कि पाँच–छः सौ के गहने दिए थे उन्होंने। फिर आप लोगों ने भी दिए हैं। आखिर यह गहने मुसीबत के समय के लिए ही हैं न।"

3. स्वाभिमानी एवं दृढ़निश्चय वाली :- सुशीला स्वाभिमानी स्त्री है। वह अपने पति के लिए सब कुछ करने का साहस रखती है। मोहन को पहाड़ पर ले जाने की समस्या को वह स्वयं ही सुलझा लेती है और मोहन के पिता से कहती है – "मैं अकेली सब कुछ कर लूँगी..... आप विश्वास रखिए। समय पड़ने पर स्त्री सब कुछ कर सकती है। इतनी शिक्षा पाई है मैंने, किस दिन के लिए? "आप मुझे एक हज़ार रुपए ला दीजिए, इसके बाद की सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर।" वह मोहन को अल्मोड़ा ले जाती है। उसे कीमती भोजन एवं ज़रूरी दवा–दारू देती है और वह स्वस्थ हो जाता है।

मोहन की बीमारी का इलाज करवाने के लिए वह अपने बाकी के जेवर भी बेच देती है और फिर एक महिला कॉलेज में सौ रुपए महीने वेतन पर नौकरी करती है। डॉक्टर मोहन का इलाज जारी रखने की सलाह देता है तो वह अपने ससुर से घर गहने रख कर कर्ज़ा लाने को कहती है, तब जो मोहन का इलाज ठीक तरह से पूरा हो सके – "बाबू जी, जिस तरह हो यह कर दीजिए। मुझे महिला कॉलेज में सौ रुपए महीना वेतन की नौकरी मिल रही है, मैं साल भर में यह कर्ज़ अदा कर दूँगी। कहीं से कर्ज़ ला दीजिए। सुशीला के सुसर इसका बहुत सम्मान करते हैं और अक्सर उसके बारे में सोचते हुए उसके प्रति अच्छे विचार व्यक्त करते हैं – "मोहन का इलाज चल रहा है, बिना किसी बाधा के। मोहन के इलाज का भार सुशीला पर है और वह बड़े साहस और धैर्य के साथ मोहन का इलाज कर रही है। सुशीला रोज़ अपने स्कूल जाती है पढ़ाने के लिए, रोज़ समय पर वापिस आती है। नियमित रूप से मोहन को दवा देती है, नियमित रूप से मोहन का पथ्य तैयार करती है। इस सबके साथ वह हंसती है। प्रसन्न रहती है। वह सब क्यों? केशव ने न जाने कितनी बार अपने से ही यह प्रश्न किया है। एक ही उत्तर मिला है केशव को बार–बार..... सुशीला अकलुष है, निष्कलंक है।"

VI. किशन

किशन केशवचन्द्र का दूसरा बेटा है। यह बड़े भाई मोहन से बिल्कुल विपरीत है। इसके चरित्र की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

1. चंचल प्रवृति का नवयुवक :- किशन स्वभाव से चंचल है। अच्छे कपड़े पहनना, दोस्तों के साथ आवारा–घूमना और सिनेमा देखना उसके शौक हैं। वह सिगरेट भी पीता है और माता–पिता का कहना नहीं मानता। वह देखने में सुन्दर, लम्बा और सुडौल युवक है, जो बड़ी गैर–जिम्मेदारी एवं लापरवाही का जीवन जीता है। उसे अपने भविष्य की कोई चिन्ता नहीं है। उसके जीवन का सिद्धान्त है – "जो कुछ सामने है, वही जीवन है और उसमें अधिक से अधिक रस लिया जाए, यह है उसका सिद्धान्त।"

2. पढ़ाई में नालायक :- किशन पढ़ाई में नालायक है। वह दो साल इन्टरमीडिएट में फेल हो चुका है और बड़ी मुश्किल से बी.ए. में पहुंचा है। बी.ए. में भी दो साल फेल होकर वह बम्बई भाग जाता है और हीरो बनने के सपने देखता है।

3. व्यवहार कुशल :- किशन बातों में बहुत चतुर है। बम्बई जाने से पहले वह माधुरी एवं सुशीला से रुपए मांग कर ले जाता है। वह माधुरी से रुपए मांगता है तेा वह कहती है कि रुपए कहाँ है बम्बई जाने के लिए? वह उत्तर देता है – "वह तुम दोगी। अरे कुल सोलह रुपए तो किराया है, सोलह दूनी बत्तीस, और आठ रुपए

ऊपर के बाकी ठहरूंगा सुरेश चाचा के यहाँ, घूमूं फिरूंगा उनके मत्थे। मेरी–अच्छी–अम्मा आज शुक्रवार है, बुध के दिन जाऊँगा। लेकिन घर में किसी को खबर न होने पावे।" वह अपनी भौजी सुशीला से कहता है – "लेकिन भौजी अभी घर में किसी से न कहना कि मैं क्यों जा रहा हूँ। माता जी से भी मैंने यही कहा है कि घूमने–फिरने जा रहा हूँ। क्यों भौजी, मैं फिल्मों में हीरो बन सकता हूँ। महीना दो तो लग ही जाएगा, काम ढूंढने में कम से कम रुपए सौ तो पास में होने ही चाहिए। अब तुम्हारा ही एक सहारा है भौजी।" सुशीला से रुपए पाकर वह कहता है – "भौजी कसम खाकर कहता हूँ कि रुपया हाथ में आते ही सबसे पहले मैं तुम्हें यह रुपया वापिस करूंगा। भगवान् ने चाहा तो सौ–दो–सौ ऊपर से भेजूंगा।

4. शौकीन स्वभाव वाला :- किशन बड़ा शौकीन व्यक्ति है। उसे नये–नये ढंग के कपड़े पहनने, बाल बनवाने और सिगरेट पीने का शौक है। एक साल बाद वह बम्बई से लौटता है तो बन–ठन के आता है – "चाईना सिल्क का सूट वह पहने था। उस पर एक भड़कीली टाई थी। दो सूटकेस थे, उसके पास। एक नया होलडाल भी साथ में था। उस पर कीमती चमकीले कपड़े पहने था..... महीन तलवारनुमा मूंछें थी। सिर पर फेल्ट हैट था और मुँह से सिगरेट लगा हुआ था।" जब केशव किशन को देखता है तो हैरान रह जाता है। वह सात रंग की टैकिट, उसके नीचे गहरे कत्थई रंग की पैंट। केशव कहता है यह क्या धजा बना रखी है तुमने? तो तुम सिगरेट भी पीने लगे? किशन निधड़क होकर पिता को उत्तर देता है – "जी, फिल्म लाइन में सिगरेट तो पीनी ही पड़ती है। अगर हीरो के हाथ में कीमती सिगरेट न हो तो हीरो बेकार। और बम्बई में आजकल इसी तरह की पौशाक का फैशन है.....लेटेस्ट डिज़ाइन।" जब केशव और मोहन उसे सलाह देते हैं कि वह फिजूल खर्ची बन्द करके कुछ रुपए घर भेजे तो वह स्पष्ट रूप से कहता है – मोहन भैया परिवार के प्रति मेरा जो कुछ भी कर्त्तव्य है, वह मैं जानता हूँ। लेकिन उसके पहले अपने प्रति भी मेरा कर्त्तव्य है, यह मैं कैसे भूल जाऊं। अपने को कष्ट में डालकर रहना मेरे ख्याल से सबसे बड़ी बेवकूफी है। दूसरे तुम्हें उस समय पूछ सकते हैं, जब तुम खुद अपने को पूछो।"

वह अपने पिता से वादा करके जाता है कि वह खूब मेहनत करेगा और उन्हें बम्बई जाकर पैसे भेजेगा। वह अपना वादा पूरा करता है और उसके द्वारा भेजे गए रुपए पाकर उसके पिता प्रसन्न होते हैं।

VII. माया

इस उपन्यास में माया आधुनिक स्त्री की प्रतीक है। वह बी.ए. पास है और कॉलेज में पढ़ती है। कॉलेज में होने वाले नाटक आदि कार्यक्रमों में भी भाग लेती है। इसके चरित्र के कुछ विशेष गुण इस प्रकार हैं :–

1. पढ़ाई में होशियार :- माया पढ़ाई में विशेष रुचि लेती है। उसके पिता केशवचन्द्र ने कहीं भी उसकी पढ़ाई को लेकर चिन्ता व्यक्त नहीं की, क्योंकि वह हमेशा पास हो जाती है। उसे ड्रामा आदि में अभिनय करने का शौक भी है और वह किशन के बम्बई जाने पर अपनी इच्छा भी प्रकट करती है कि वह भी फिल्मों में जाना चाहती है।

2. साधारण नवयुवती :- माया एक साधारण युवती की तरह घर में रहती है। उसे सभी सदस्यों से प्रेम है अपनी माँ, भाभी सुशीला तथा छोटे भाई–बहनों से प्रेम करती है। कभी कोई तकरार भी हो जाए तो उसे जल्दी भुला देती है। माँ तथा भाभी के साथ गृहकार्यों में रुचि लेती है। अपने भाई किशन से उसे स्नेह है और उसके बम्बई चले जाने पर वह उसके उज्जवल भविष्य की कामना करती है। वह अपने भाई मोहन से भी सहानुभूति रखती है और छोटे भाई–बहन के प्रति भी मोह व्यक्त करती है।

3. आधुनिक विचारों वाली :- माया के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह आधुनिक विचारों वाली समझदार लड़की है। उसके पिता अर्थाभाव के कारण उसका विवाह एक ऐसे व्यक्ति से करना चाहते हैं, जो पैसे वाला है, दहेज नहीं चाहता परन्तु तीन बच्चों का बाप है। यह जानकर माया पिता का विरोध करती है – "जो कुछ मैं कह रही हूँ यह ठीक है बाबू जी आपने मुझे पढ़ा–लिखा कर इन्सान बनाया है तो मेरे साथ आप मनुष्यता का व्यवहार कीजिए। मैं जानवर नहीं हूँ, जिसके साथ चाहा उसके साथ मुझे बांध दिया। मैं सम्पति नहीं हूँ कि जिसे चाहा उसे दे दिया। मुझ में भी भावना है..... मुझ में भी व्यक्तित्व है। मैं अपना हित–अहित समझ सकती हूँ।" पिता द्वारा डांटने पर वह कहती है – "आप मेरे प्राण ले लीजिए, आपको पूरा अधिकार है, क्योंकि आपने मुझे जन्म दिया है, लेकिन जो न्याय की बात है, जो सत्य है, उसे कहने से आप मुझे रोक नहीं सकते। मैं अनुचित बात नहीं कह रही हूँ। मुझे विवाह नहीं करना अन्तिम बार कहे देती हूँ।" माँ के समझाने पर वह उत्तर देती है – "अम्मा मुझे विवाह नहीं करना है। देख तो रही हूँ तुम्हारी हालत, भौजी की हालत बुआ जी की हालत। विवाह के अर्थ हैं स्त्री को नरक में ढकेल देना और इस नरक में आप लोग मुझे नहीं ढकेल सकते, मर जाना मैं उस नरक में पड़ने की अपेक्षा अधिक पसंद करूँगी।"

माँ कहती है कि माया की पढ़ाई ने ही उसकी मति मार दी है, तो इस पर वह हंस कर कहती है – "पढ़ना–लिखना बवाल मोल लेना नहीं है। अम्मा, भौजी को देख रही हो न। पढ़ी–लिखी है, तभी तो मोहन भैया को बचा सकीं। मैं तो कहती हूँ कि हमें अपनी ज़िन्दगी के रंग–ढंग बदलने चाहिए। माया एम.ए. तक पढ़ना चाहती है किन्तु परिवार में पैसे की कमी होने के कारण वह आगे पढ़ नहीं पाती।

4. साहसी :- माया स्वभाव से साहसी है। लेखक ने उसके व्यक्तित्व का परिचय देते हुए लिखा है – "माया की अवस्था उन्नीस साल की थी, यौवन पूर्ण रूप से आ गया था, उसके ऊपर। उसका रंग बहुत गोरा तो नहीं था, लेकिन वह सुन्दर थी। मुहल्ले–पड़ोस के युवक किन नज़रों से उसे ताकते थे, केशव को इसका पता था। माया हृष्ट–पुष्ट थी, उसमें साहस का अभाव नहीं था। इंजीनियर सिंह के शोहदे लड़के की माया ने बीच चौराहे चप्पलों से मुरम्मत की थी, उस पर एक हंगामा सा मच गया था..... माया कॉलेज के कार्यक्रमों में बिना किसी हिचक के भाग लेती थी। वह अच्छा गाती और अच्छा अभिनय करती थी। अपने इसी साहस का परिचय माया उस समय भी देती है, जब वह घर से भाग कर अपने भाई के पास बम्बई चली जाती है और वहां अपनी मेहनत से काम ढूंढ कर, रुपए कमा कर अपने पिता को भेजती है। उसके पिता उसके इस साहस पर प्रसन्न होते हैं और अपनी मेहनती पुत्री पर गर्व अनुभव करते हैं।

2.3.2.1 स्वयं जांच अभ्यास

1. उपन्यास के पात्रों के नाम लिखें।

.....

.....

.....

2.3.3 सारांश

उपन्यास 'थके पांव' के लगभग सभी पात्रों का चरित्र–चित्रण किया जा चुका है। ये सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं और इनके चरित्र एवं स्वभाव की अलग–अलग विशेषताएं हैं। यह बड़ी सामान्य सी बात है कि एक ही परिवार के सदस्य अपनी विभिन्न आदतों के कारण एक ही छत के नीचे रहते हुए आपसी मतभेदों में जीते रहते हैं। उनके बीच का परस्पर संघर्ष जीवन को गति एवं रोचकता प्रदान करता है। इस पाठ को पढ़ने के

बाद आपको एक परिवार के सभी सदस्यों से भली–भांति परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ और आप उनके चरित्र संबंधी जानकारी प्राप्त कर पाए।

2.3.4 प्रश्नावली

1. मोहन एवं किशन किसके पुत्र हैं?
2. माधुरी के चरित्र की सबसे अच्छी विशेषता क्या है?
3. इस उपन्यास की कौन–सी स्त्री पात्र सच्चे अर्थों में भारतीय नारी की प्रतीक कही जा सकती है?
4. केशवचन्द्र किस प्रकार के व्यक्ति हैं?
5. क्या माया आधुनिक विचारों की प्रतीक बनने में सफल रही?
6. इस उपन्यास के पात्रों में सबसे अच्छा पात्र आपको कौन–सा लगा?

2.3.5 सहायक पुस्तकें

1. साहित्यालोचन – श्याम सुन्दर दास
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र

पाठ संख्या : **2.4** लेखिका : डॉ. हरिसिमरन कौर

'थके पांव' परिवेश तथा संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य और सप्रसंग व्याख्या

इकाई की रूप-रेखा

2.4.0 उद्देश्य
2.4.1 प्रस्तावना
2.4.2 'थके पांव' उपन्यास में चत्रित परिवेश
2.4.3 संरचना शिल्प
2.4.4 'थके पाँव' का प्रतिपाद्य
2.4.4.1 स्वयं जांच अभ्यास
2.4.5 सारांश
2.4.6 प्रश्नावली
2.4.7 सहायक पुस्तकें

2.4.0 उद्देश्य

इस पाठ में हम 'थके पांव' उपन्यास में चित्रित परिवेश की चर्चा करेंगे। जिस परिवेश एवं वातावरण का चित्रण उपन्यास में किया जाता है, उससे हमें उस समय विशेष के समाज, रीति–रिवाजों एवं राजनीतिक–धार्मिक परिस्थितियों का परिचय प्राप्त होता है। यही कारण है कि किसी भी उपन्यास को पढ़कर हम यह जान जाते हैं कि इसकी कथावस्तु का सम्बन्ध किस समय के समाज, सभ्यता एवं जीवन से है। उपन्यास में आए पात्र एवं घटनाएं भी उस वातावरण से पूर्ण रूप से सम्बन्धित होते हैं। इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :–

- उपन्यास की कथावस्तु का सम्बन्ध किस समाज से है;
- इस समाज के रीति–रिवाज़ क्या हैं;
- इसमें आए पात्रों का रहन–सहन, खान–पान कैसा है;
- इन पात्रों का मानसिक स्वर किस प्रकार का है;
- इस समय की धार्मिक और राजनीतिक परिस्थिति किस प्रकार की है;
- इस समाज की प्रमुख समस्याएं क्या हैं।

2.4.1 प्रस्तावना

जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है, समय एवं परिस्थिति के अनुसार समाज की स्थिति में परिवर्तन आते रहे

हैं। मनुष्य जिस सामाजिक परिवेश में जन्म लेता है और विकसित होता है, उसका जीवन में विशेष महत्व होता है। साहित्यकार जब किसी समाज के जीवन पर साहित्यिक रचना करता है तो उसके सामाजिक परिवेश का चित्रण सहज ही हो जाता है। प्रत्येक रचना में एक समय विशेष के परिवेश का आ जाना स्वाभाविक है। 'थके पांव' उपन्यास की कथावस्तु का सम्बन्ध एक साधारण से परिवार के जीवन की घटनाओं से है। यह कथा एक परिवार की तीन पीढ़ियों की कथा बड़े संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करती है। इसमें तीन पीढ़ियों के सामाजिक परिवेश का बड़ा रोचक वर्णन है, जिसका विश्लेषण यहाँ किया जाएगा।

2.4.2 'थके पांव' उपन्यास में चित्रित परिवेश

'थके पांव' उपन्यास में चित्रित परिवेश को अलग–अलग शीर्षकों के अन्तर्गत रख कर आंका जा सकता है :

1. सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण :- इस उपन्यास में भगवती चरण वर्मा ने एक विशेष समय के समाज को उसकी विभिन्न परिस्थितियों के साथ चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। मुख्य पात्र केशवचन्द्र की आयु पचास वर्ष है। अपने जीवन के बीते दिनों को याद करता वह अपने पिता के समय को याद करता है। उसके बच्चे जवान हो गए हैं, विवाहित भी हैं और कुछ बच्चे नई पीढ़ी और आधुनिक विचारों वाले हैं। उपन्यास की कथावस्तु तीन पीढ़ियों की सामाजिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण करती है। पहली पीढ़ी के मुख्य पात्र हैं रामचन्द्र। जो केशवचन्द्र के अनुसार शान्त और संयत, आचार–विचार के प्रति आस्था रखने वाले हैं। रामचन्द्र में महत्त्वाकांक्षा नहीं थी। उनके अन्दर मानवीय दया, सहानुभूति और संवेदना के अवयव थे। बाबू रामचन्द्र उस समय से सम्बन्ध रखते हैं, जब व्यक्ति का जीवन अत्यन्त सादा था। उसकी ज़रूरतें बड़ी कम थी, इसलिए धन के लिए भटकन भी नहीं थी। रुपये की बहुत कीमत थी, इसलिए लोग थोड़ी आय में ही सन्तुष्ट रहते थे। रामचन्द्र अच्छी तरह रहने में विश्वास रखते थे, अच्छा खाने में विश्वास करते थे। अपनी सन्तान को सुखी और समृद्ध देखना चाहते थे। पचास रुपये महीने में वह यह सब कर लेते थे।

केशवचन्द्र दूसरी पीढ़ी के प्रमुख पात्र हैं और उस समय में जीवन व्यतीत करते हैं, जब रुपयेकी कीमत कम हो गई है। वे भी दफ्तर में बाबू हैं और एक सौ बीस रुपये आय पाकर भी जीवन भर तंगी सहते रहे। उन्हें कई बार रिश्वत लेने के मौके मिले पर वह अपने आदर्शों को नहीं छोड़ पाए। तीसरी पीढ़ी का मुख्य पात्र किशन माना जा सकता है, जिसके लिए रुपया पैसा सबसे बड़ी चीज़ है। वह किसी आदर्श नियम को नहीं मानता, केवल पैसा कमाना चाहता है ताकि जीवन के सभी सुख प्राप्त कर सके। इन तीन पीढ़ियों के माध्यम से लेखक ने तीन कालों की सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण करने का प्रयास किया है।

2. मध्यवर्ग का चित्रण :- 'थके पांव' उपन्यास की कथावस्तु समाज के मध्यवर्ग से सम्बन्ध रखती है। लेखक ने इस वर्ग की विभिन्न पारिवारिक समस्याओं का चित्रण किया है। बाबू रामचन्द्र से लेकर मोहन तथा किशन सभी सदस्य विभिन्न समस्याओं से जूझते हैं। रामचन्द्र अपनी बेटी सुधा के विवाह के लिए धन इकट्ठा करने की चिन्ता में है। केशवचन्द्र के पास परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पैसा नहीं है। किशन मध्यवर्गीय समस्याओं से परेशान होकर घर से चला जाता है और रुपया कमाने के चक्कर में रहता है। मोहन को तपेदिक हो जाती है, तो उसके इलाज के लिए उसकी पत्नी को अपने गहने बेचने पड़ते हैं। माधुरी परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किसी न किसी उलझन में घिरी रहती है। मध्यवर्ग के गृहस्थ जीवन का सही चित्रण करते हुए लेखक ने पात्रों की विभिन्न समस्याओं का चित्रण भी किया है। उपन्यास की कथावस्तु का सम्बन्ध जिस समय से है, उन दिनों भारतीय समाज में संयुक्त परिवारों का प्रचलन था। केशवचन्द्र का परिवार भी संयुक्त परिवार है, जिसमें उसके विवाहित बेटा–बहू भी साथ ही रहते हैं। मध्यवर्ग के पास आमदनी के साधन सीमित होते हैं और खर्चा अधिक। इस वर्ग के लोग किस प्रकार उम्र भर रुपये

पैसे का अभाव सहते हैं, इसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

3. पारिवारिक समस्याओं का चित्रण :- इस उपन्यास में उस समय का चित्रण किया गया है, जब स्त्रियों की शिक्षा को विशेष महत्व नहीं दिया जाता था और उन्हें केवल दहेज के बल पर ब्याह दिया जाता था। लोग अपने बेटों के भविष्य की परवाह न करके केवल दहेज के लालच में उनका विवाह कर देते थे। मोहन पढ़ाई में होशियार है और आई.ए.एस. की परीक्षा में बैठने के लिए कठिन मेहनत करता है, परन्तु उसके पिता उसका विवाह कर देते हैं। विवाह का कारण है दहेज में मिलने वाले पाँच हज़ार रुपये जिससे वो नया मकान खरीदना चाहते हैं। उन्हें अपनी बहू लक्ष्मी का साक्षात् रूप नज़र आती है। मोहन पढ़ाई पूरी न होने के कारण कभी अच्छी नौकरी नहीं पा सकता और चिन्ता में घुल–घुल कर बीमार हो जाता है। उसका इलाज भी उसकी पत्नी के गहने बेचकर होता है। इस प्रकार की पारिवारिक समस्याएं मध्यवर्ग का अभिन्न अंग हैं, जिसका लेखक ने बड़ा जीवन्त वर्णन किया है। इसी प्रकार केशवचन्द्र अपनी बेटी माया का विवाह एक दुहाजू से करने को तैयार हो जाते हैं, जो तीन बच्चों का बाप है। इसका कारण यह है कि वह बिना दहेज के विवाह करने को तैयार है।

लेखक ने गृहस्थ जीवन की बहुत सी समस्याओं का चित्रण भी किया है, जो उस समय को प्रस्तुत करता है, जिस समय यह उपन्यास लिखा गया। जैसे रीति–रिवाज़ों पर किए जाने वाले खर्च जिनके लिए उधार पैसा लेकर उम्र भर उसका बोझ ढोना पड़ता है।

4. पात्रों के माध्यम से परिवेश चित्रण :- उपन्यास में मध्यवर्ग से सम्बन्ध रखने वाले पात्रों के रहन–सहन, वेश–भूषा, खान–पान एवं संस्कारों का चित्रण भी है, जो उनके सामाजिक परिवेश को प्रस्तुत करता है। रामचन्द्र, केशवचन्द्र झूठ, बेईमानी, रिश्वतखोरी तथा कपट में विश्वास नहीं रखते। वे सच्चाई का जीवन जीना चाहते हैं और उन्हें जीवन में कई कष्ट सहने पड़े परन्तु उन्होंने अपने आदर्शों का त्याग नहीं किया। ऐसे चरित्र एक ऐसे युग के प्रतीक हैं, जो उच्च जीवन मूल्यों को निभाने के लिए सब कुछ सहन कर लेते हैं।

5. बदलती सामाजिक मान्यताओं का चित्रण :- इस उपन्यास में लेखक ने उस समय का चित्रण किया है, जब भारतीय समाज में नई मान्यताएं विकसित हो रही थी। इनमें सबसे महत्वपूर्ण थी स्त्री शिक्षा का प्रचलन, जिसका वर्णन इस उपन्यास में किया गया है। माया स्कूल की पढ़ाई पूरी करके कॉलेज जाना चाहती है, परन्तु माता–पिता उसका विवाह कर देना चाहते हैं। वह पूरे आत्म–विश्वास के साथ उन्हें यह बात समझाती है कि उसकी पढ़ाई और भविष्य विवाह से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उसके पिता उसका विवाह एक दुहाजू से करना चाहते हैं, जिसका वह डट कर विरोध करती है। इसका कारण स्त्री–शिक्षा है। वह भाई के पास बम्बई जाकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है। उपन्यास में एक अन्य नई मान्यता की ओर भी संकेत है, जिसमें केशवचन्द्र की बहू सुशीला नौकरी करती है। केशवचन्द्र उस समय से सम्बन्ध रखते हैं, जब स्त्री का नौकरी करना बुरा माना जाता था। सुशीला कॉलेज में पढ़ाती है और ट्यूशन भी करती है। वह अपने ससुर को कहती है कि समय आने पर स्त्री सब कुछ कर सकती है। माया भी काम करती है और अपने पिता को रुपए भेजती है। इस उपन्यास में स्त्री के शिक्षित होने एवं आत्मनिर्भर होने का संकेत है, जो भारतीय समाज के उस काल एवं परिवेश को प्रस्तुत करता है, जब इनका आरम्भ हो रहा था।

2.4.3 संरचना–शिल्प

उपन्यास में लेखक घटनाओं, स्थितियों एवं पात्रों के मनोभावों का चित्रण करता है, जिसके लिए वह जिस

माध्यम का प्रयोग करता है, वह है भाषा। कथावस्तु की ज़रूरत के अनुसार यह उपन्यास की शैली भी निर्धारित करता है। पात्रों की पारस्परिक बातचीत, कथा–विकास और पात्रों के चरित्र–चित्रण के लिए महत्वपूर्ण होती है। यहाँ हम 'थके पांव' उपन्यास की संरचना पर विचार करेंगे :–

1. शैली :- यह उपन्यास वर्णनात्मक शैली में लिखा गया है। लेखक अपनी तरफ से सारी कहानी कहता है। यह मध्यवर्ग के एक सामान्य व्यक्ति की जीवन गाथा है, जिसमें वह बचपन से बुढ़ापे तक विभिन्न परिस्थितियों एवं संघर्षों को झेलता हुआ जीवन व्यतीत करता है। यह उसके वर्तमान जीवन की मुख्य कथा है। कहीं–कहीं लेखक ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग भी किया है। जैसे उपन्यास का मुख्य पात्र केशवचन्द्र अपने बीते हुए जीवन को याद करता है। लेखक ने कथा का वर्णन इतने सजीव रूप में किया है कि वे हमारे सामने घटती हुई प्रतीत होती है। सामान्य मध्यवर्गीय परिवारों के जीवन की झांकी प्रस्तुत करने में लेखक सफल हुआ है। केशवचन्द्र, मोहन, किशन, सुशीला तथा माया के अन्तर्द्वन्द्वों को भी लेखक ने बड़ी स्वाभाविकता से प्रस्तुत किया है।

2. भाषा :- इस उपन्यास की भाषा अत्यन्त सहज एवं स्वाभाविक है। लेखक केशवचन्द्र के परिवार की घटनाओं को बड़े रोचक ढंग से और प्रसंग के अनुसार प्रस्तुत करता है। प्रत्येक स्थिति का वर्णन अत्यन्त सजीव एवं सइज है। इस रचना में खड़ी बोली का स्वाभाविक रूप प्रकट हुआ है। बोलचाल के तत्सम् शब्दों का सुन्दर प्रयोग है। उपन्यास की कथावस्तु का आधार एक सामान्य व्यक्ति के संघर्षपूर्ण जीवन की गाथा कहना है जो विभिन्न संघर्षों से जूझते हुए इतना थक गया है कि उसके लिए कुछ कदम भी चल पाना असम्भव प्रतीत हो रहा है। उपन्यास के आरम्भ में लेखक इस व्यक्ति का परिचय दे देता है। उपन्यास का आरम्भ अत्यन्त प्रभावपूर्ण एवं रोचक है।

"लड़खड़ाते हुए पैर। .....वह चल रहा है क्योंकि उसे चलना पड़ रहा है, लेकिन जैसे पैर चलना ही नहीं चाहते। जीवन में गति होती है, उस गति को प्रेरणा, भावना की तीव्रता से मिला करती है, लेकिन जैसे उसके अन्दर वाली समस्त भावना कुंठित हो गई है और एक अजीब तरह की गतिहीनता भर गई है उसके अन्दर जो पैरों को आगे बढ़ने से रोकती है। लेखक ने आगे लिखा है – "वह थक गया है, बुरी तरह थक गया है, लेकिन उसे चलते रहना है।..... चलना तो उसे होगा ही, मन कितना भी भारी हो, पैरों में कितनी भी थकावट हो।" इस व्यक्ति के थके पांवों का परिचय देने के बाद लेखक उसके जीवन की पूरी कथा कहता है। उपन्यास का ऐसा आरम्भ लेखक की अपनी विशेषता है, जिससे प्रभावित होकर पाठक अगली कथा का ज्ञान पाने को उत्सुक हो उठता है।

2.4.4 'थके पाँव' का प्रतिपाद्य

'थके पांव' भगवती चरण वर्मा का सामाजिक उपन्यास है, जिसमें मध्यवर्ग के एक परिवार के जीवन का यथार्थ चित्रण है। उपन्यास के प्रधान नायक केशवचन्द्र का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। वे ऐसे दफ्तर में काम करते हैं, जहां उन्हें रिश्वत का पैसा मिल सकता है, पर वे उसे कभी स्वीकार नहीं करते। उन्हें कष्टमय जीवन व्यतीत करना स्वीकार है, परन्तु वे अपने आदर्शों को नहीं छोड़ पाते। इस उपन्यास की रचना के उद्देश्य को हम कुछ शीर्षकों के अन्तर्गत रख सकते हैं :–

1. उच्च जीवन मूल्यों की स्थापना

'थके पांव' उपन्यास में लेखक ने केशवचन्द्र के चरित्र के माध्यम से उच्च जीवन मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया है। हमने उपन्यास पढ़ते हुए देखा है कि केशवचन्द्र उम्र भर रुपये पैसे की तंगी सहते रहे परन्तु उन्होंने रिश्वत नहीं ली। उनके जीवन में एक समय ऐसा आया जब उन्होंने अपने बेटे के ईलाज के लिए एक हज़ार रुपये रिश्वत ली। यह उनके लिए मानसिक पीड़ा बन गई। वे स्वयं को अपराधी समझने लगे। इस रुपये को वे कहीं भी खर्च नहीं कर पाए, क्योंकि उनकी अन्तरात्मा उन्हें धिकारती रही। वे इसे पाप का रुपया समझते

हैं और अपने मालिक के पास जा कर स्वयं उसे बताते हैं। मैनेजर उनसे कहता है कि उन्होंने यह रुपया मज़बूरी की हालत में लिया है अर्थात् बेटे को बचाने के लिए लिया है। केशवचन्द्र कहते हैं – "लेकिन बचाता है पुण्य, पाप नहीं बचाया करता। मेरी बहू नौकरी करके और मेहनत करके अपने पति को बचा रही है, मैं भला क्या पाप के रुपयों से बचा सकूँगा उसे? यह पाप मुझे खा जाएगा, मुझे इसका दण्ड मिलना चाहिए।" इस पाप के प्रायश्चित के लिए वे अपनी नौकरी से त्याग–पत्र दे देते हैं। पाप की कमाई ने उनकी ईमानदारी की नौकरी छीन ली परन्तु फिर भी वे दुःखी नहीं हुए। रिश्वत के रुपयों को केशवचन्द्र किसी अनाथालय में दान करने जाता है, तो उन्हें लगता है कि उनके मन का बोझ उतर गया है।

केशवचन्द्र के जीवन की इस घटना के माध्यम से लेखक ने एक सत्य का उद्घाटन किया है कि गरीबी और अभाव बेईमानी को जन्म देते हैं, किन्तु लोग ऐसे हैं, जो बेईमानी नहीं कर पाते। ऐसे लोग आत्म–सन्तोष एवं आत्म–सम्मान से जो जीते हैं, जो मेहनत करके जो कुछ भी प्राप्त होता है, उसी से संतोष कर लेते हैं। लेखक के शब्दों में दुनिया में अधिकतर आदमी ईमानदार हैं, पर परिस्थितियों में वह बेईमान हो जाया करते हैं। कौन किस वक्त बेईमानी कर जाए इसका कोई ठिकाना नहीं। गरीबी और अभाव में सारी बेईमानी की जड़ है। केशवचन्द्र जीवन में केवल एक बार यह बेईमानी करके बेचैन हो उठता है। वह अपने आप को केवल वे जानते हैं या रामकिशोर जानता है परन्तु वे ईश्वर से डरते हैं और कहते हैं एक और जानने वाला है इस पाप को जिसे वह देख नहीं पाते, जिसे लाला रामकिशोर देख नहीं पाते। उस तीसरे की ही तो जानकारी सबसे महत्वपूर्ण जानकारी है, क्योंकि वही निर्णायक है, वही विधायक है, न्यायकर्ता है, वह दण्ड भी देता है। उसका सबसे पहला दंड है। केशव के मन में उस भयानक आशान्ति और ग्लानि का भर जाना। इसके बाद भी दंड होंगे, जिन्हें वह नहीं मानता लेकिन उनकी यातना इससे भी भयानक होगी।

केशवचन्द्र अपनी बहू सुशीला को अपने से कहीं अच्छा मानते हैं, जो स्कूल में पढ़ाकर अपने पति की सेवा के लिए धन कमाती है। उन्हें लगता है कि सुशीला अकलुष है, निष्कलंक है। केशवचन्द्र के माध्यम से लेखक ने मानव जीवन की असारता पर भी विचार किया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को अपने ढंग से जीता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अन्त भी निश्चित है और इस सत्य को जानते हुए भी हर व्यक्ति का जीवन के प्रति दृष्टिकोण भिन्न है। इस सत्य का प्रतिपादन करते हुए लेखक ने बड़े सुन्दर शब्दों में लिखा है :–

"हरेक चीज़ का अन्त सिवा विनाश के होता क्या है? फल क्या होगा? कोई नहीं जानता, फिर भी फल की कल्पना हर व्यक्ति करता है, फल के आधार पर वह अपना जीवन ढालता है। अपने कर्मों को रूप देता है।" लेखक ने इस बात पर भी विचार किया है कि हमारे जीवन में कितने भी कष्ट आएं, हम जीवन जीने का कोई भी मार्ग अपनाएं, इतना निश्चित है कि हमें चलते रहना पड़ता है। जीवन के संघर्षों से जूझते हुए व्यक्ति थक कर टूट सकता है, फिर भी उसे जीना पड़ता है। लेखक के शब्दों में – "वह थक गया है, बुरी तरह थक गया है। लेकिन उसे चलते रहना है। जिस रास्ते को उसने अपनाया था, वह सहसा रुक गया है और फिर पीछे मुड़कर उसे दूसरा मार्ग ढूंढना है। चलना तो उसे होगा ही, मन कितना ही भारी हो, पैरों में कितनी ही थकावट हो।"

2. स्त्री सम्बन्धी नवीन दृष्टिकोण

'थके पांव' उपन्यास की रचना उस भारतीय समाज से सम्बन्ध रखती है, जब स्त्री–शिक्षा को अच्छा नहीं समझा जाता था। लेखक ने इस रचना में दो शिक्षित स्त्री पात्रों का परिचय दिया है, जो स्त्री शिक्षा और उसकी आत्म–निर्भरता का समर्थन करती है। लेखक का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि पढ़ी–लिखी स्त्री अपना जीवन सुखी बना सकती है और अवसर मिलने पर सब कुछ कर सकती है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति

के लिए लेखक ने माया का परिचय दिया है, जो पढ़ी–लिखी एवं आत्म–विश्वास वाली नवयुवती है। वह अपनी माँ तथा भाभी की तरह केवल गृहलक्ष्मी बनकर नहीं जीना चाहती। वह पढ़–लिख कर आत्म–निर्भर होना चाहती है और उपन्यास के अन्त में वह इस कार्य में सफल भी हुई है। वह अनमेल विवाह का विरोध करने का साहस भी करती है और अबला बनकर नहीं जीना चाहती। नारी सम्बन्धी इस समस्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लेखक ने लिखा है : "मध्यवर्ग की लड़कियों को शिक्षा मिलने लगी है। कॉलेज की उच्च शिक्षा का ध्येय ही क्या हो सकता है। धन का उपार्जन ही तो लड़कियों की उच्च–शिक्षा का ध्येय हो सकता है, परन्तु व्यक्ति इस ध्येय को स्वीकार करने से इन्कार करता है। स्त्री शिक्षा का एक मात्र पहलू सामाजिक स्वावलम्बन का होता है, परन्तु इस स्वावलम्बन के पहलू को अवगत एवं अचेतन अवस्था में ही व्यक्ति स्वीकार करता है, परम्परा के बन्धनों में जकड़ा हुआ पुरुष स्त्री को स्वावलम्बी नहीं देखना चाहता, अवलम्ब देना तो पुरुष का काम है। इस परम्परागत धारणा का विरोध लेखक ने स्त्री के द्वारा ही किया है। माया अपने पिता से कहती है – "जो कुछ मैं कर रही हूँ वह ठीक है बाबू जी। आपने मुझे पढ़ा–लिखा कर मनुष्य बनाया है, तो मेरे साथ आप मनुष्यता का व्यवहार कीजिए। मैं जानवर नहीं हूँ, जिसके साथ चाहा उसके साथ मुझे बांध दिया। मैं सम्पत्ति नहीं हूँ कि जिसे चाहा उसे दे दिया। मुझमें भी भावना है, मुझमें भी व्यक्तित्व है। मैं अपना हित–अहित समझती हूँ।"

उपन्यास में दूसरी शिक्षित पात्र है सुशीला। जो पूरी सूझ–बूझ से पति की बीमारी का इलाज करवाती है। घर में रुपये की कमी होने के कारण मोहन के पिता उसे सरकारी सेनीटोरियम में रखना चाहते हैं, पर सुशीला उसे वहाँ नहीं भेजती, वह अपने गहने बेचकर अकेली मोहन को अल्मोड़ा ले जाकर उसकी देखभाल करना चाहती है। वह अपने ससुर से कहती है – मैं अकेली सब कुछ कर लूँगी, आप विश्वास रखिए। समय पड़ने पर स्त्री सब कुछ कर सकती है। इतनी शिक्षा पाई है मैंने किस दिन के लिए? आप मुझे एक हज़ार रुपये ला दीजिए, उसके बाद की सारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर।" इस संदर्भ में लेखक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है – "जिस समाज और जिस परम्परा में वह (केशव) पला था, वहाँ स्त्री अनपढ़, असमर्थ और विवश होती थी। वहाँ स्त्री के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं किया जाता था और केशव की समझ में नहीं आ रहा था कि स्त्री का भी एक सामाजिक अस्तित्व है, जो पुरुष की भांति ही महत्वपूर्ण है।"

लेखक ने स्त्री सम्बन्धी नवीन दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते हुए शिक्षित पात्रों की प्रशंसा भी की है। माया उसकी माँ माधुरी और केशवचन्द्र सभी सुशीला की प्रशंसा करते हैं और यह मानते हैं कि पढ़ी–लिखी होने के कारण ही वह इतनी कुशल है।

2.4.4.1 स्वयं जांच अभ्यास

1. 'थके पांव' उपन्यास की कथावस्तु का सम्बन्ध समाज के किस वर्ग से है?

.....

.....

.....

सप्रसंग व्याख्या

यहां हम 'थके पांव' उपन्यास में आए कुछ महत्वपूर्ण गद्य–स्थलों की व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं, जो परीक्षा

की दृष्टि से भी उपयोगी है :–

1. लड़खड़ाते हुए पैर.....रोकती है।

('थके पांव' पृष्ठ 5 भगवती चरण वर्मा/प्रकाशक राजपाल एंड संस/संस्करण 1999)

प्रसंग :- ये पंक्तियां श्री भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'थके पांव' में से ली गई हैं। इस उपन्यास में लेखक ने एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के संघर्षपूर्ण जीवन की गाथा कहने का प्रयत्न किया है। यह व्यक्ति जीवन भर विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों एवं अभावों में जूझता इतना थक जाता है कि उसे अपने पैर बेजान लगते हैं और वह स्वयं को असहाय पाता है। इन पंक्तियों में उसके शक्तिहीन पांवों का वर्णन करते हुए लेखक कहता है :–

व्याख्या :- जीवन के संघर्षों से जूझते हुए इस व्यक्ति के पैर लड़खड़ा रहे हैं, परन्तु फिर भी वह चल रहा है क्योंकि चलते रहना उसकी मज़बूरी है। जब जीवन में गति और उत्साह होता है, तो मन की भावना भी उससे मिल जाती है। परन्तु जब मन में कोई उत्साह न हो तो मनुष्य गतिहीन हो जाता है और उसे लगता है कि वह चल भी नहीं पाएगा।

विशेष :- इन पंक्तियों में लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि मनुष्य के जीवन की गति उसके मन की स्थिति पर निर्भर करती है। जब तक जीवन में खुशी और उत्साह है, वह भागा फिरता है, परन्तु जब मन निराश होता है तो वह गतिहीन हो जाता है।

2. "असल में.....है क्या?"

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक मनुष्य जीवन के विविध पहलूओं पर विचार करता हुआ कहता है कि वास्तव में गति ही जीवन का दूसरा भाग है। गतिहीन होना मृत्यु है। यह गति अथवा क्रिया संघर्ष पर आधारित है। जीवन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना और उनके साथ जूझना ही संघर्ष है। जो व्यक्ति स्वयं को इस संघर्ष में लगाए रखता है, उसका जीवन गतिशील रहता है।

विशेष :- इन पंक्तियों में लेखक ने जीवन में संघर्ष के महत्व को स्पष्ट किया है। जीवन के सुख–दुःख एवं कठिनाइयों में डटकर संघर्ष करना, परिस्थितियों के साथ जूझना और निरन्तर जूझते रहना ही सच्चे अर्थों में जीना है।

3. "जीवन एक.....खो देता है।" *(पृष्ठ 39)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक जीवन में विकट परिस्थितियों का सामना करते हुए मनुष्य की स्थिति पर विचार करता हुआ कहता है कि मनुष्य का जीवन एक निरन्तर चलने वाली लड़ाई है, जिसका केशवचन्द्र को भी लम्बा अनुभव हुआ है। जीवन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करता हुआ मनुष्य अब संघर्ष छोड़ देता है, तो वह मर जाता है। ऐसी असफलता एवं निराशा की स्थिति मनुष्य को जीवित नहीं रहने देती, क्योंकि वह मृत्यु का एक अंश है। जीवन कभी गतिहीन नहीं होता। यही कारण है कि जीवन भर मनुष्य हज़ारों कठिनाइयों के होते हुए भी हंसता–गाता रहता है।

विशेष :- इन पंक्तियों में लेखक ने जीवन की एक बहुत बड़ी सच्चाई पर विचार किया है कि मनुष्य जीवन

में अनेकों कमियों को सहन करके भी खुश होकर जीता है। यह जीवन की पहचान है। यदि वह दुःखों से घबराकर जीना छोड़ दे तो वह एक मृत व्यक्ति के समान हो जाएगा। जब तक जीवन है, उसमें गति भी होगी। यदि मनुष्य संघर्ष न करके गतिहीन हो जाएगा, तो वह मृत कहलाएगा।

4. "जिसे लोग.....साहस नहीं है।" *(पृष्ठ 66)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक मध्यवर्ग के लोगों के जीवन पर विचार करते हुए कहते हैं कि इस वर्ग के लोगों को जीवित रहने के लिए एक बड़ा भयानक जीवन संघर्ष करना पड़ता है। समाज का यह वर्ग स्वयं को सम्पन्न, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का पोषक बताने का प्रयत्न करता है। अपने अभावों के कारण यह वर्ग सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को निभाने में असमर्थ होता है, परन्तु उसे यह दिखावा करना पड़ता है कि वह उच्च जीवन–मूल्यों को साथ लेकर जी रहा है। अभावों में जूझता यह वर्ग न तो मान्यताओं को निभा सकता है और न ही उनका त्याग करने का साहस करता है।

विशेष :- इस गद्य खण्ड में लेखक ने मध्यवर्ग की मज़बूरी का वर्णन किया है जो विभिन्न सामाजिक और नैतिक मान्यताओं को बड़ी कठिनाई से झेलता रहता है। यह वर्ग इतना समर्थ भी नहीं है कि किसी परम्परा या मान्यता का विरोध कर सके।

5. "वर्तमान पीढ़ी.....कटु सत्य है।" *(पृष्ठ 41)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक ने नई और पुरानी पीढ़ी की वास्तविक स्थिति पर विचार किया है। लेखक के अनुसार वर्तमान पीढ़ी अपनी अगली पीढ़ी का भविष्य बनाने के लिए अपनी सारी–शक्ति लगा देती है। उसके पास केवल उसका अतीत बच जाता है, जो मृत्यु का दूसरा नाम है। जब से सृष्टि बनी है, यह क्रम निरन्तर चल रहा है। यह एक कड़वा सत्य है, जो कुरूप है, परन्तु हर पीढ़ी को यह भोगना पड़ता है। यह एक अटल सच्चाई है और हर व्यक्ति को इसे भोगना पड़ता है।

विशेष :- इस गद्यांश में लेखक ने एक सत्य पर विचार किया है कि एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी की निर्माता होती है और इसके लिए वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करती है।

6. "घुटकर तिल-तिल कर.....करते हैं।" *(पृष्ठ 82)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक ने मध्यवर्ग की स्थिति पर विचार करते हुए कहा है कि असंख्य अभावों में जीता हुआ मध्यवर्ग घुटकर तिल–तिल कर मरता रहता है। यह स्थिति उसे कायर बना देती है। ऐसे लोगों से समाज का अस्तित्व बना हुआ है। इस वर्ग में से थोड़े से लोग साहस करके ऊपर उठते हैं और अपना एक अलग वर्ग बना लेते हैं। ऐसे लोग मध्यवर्ग पर अपना शासन चलाते हैं।

विशेष :- इस गद्य खण्ड में लेखक ने मध्यवर्ग में से उभरने वाले कुछ समर्थ एवं धनी लोगों के वर्ग की ओर संकेत किया है। जो उच्च वर्ग के लोग कहे जाते हैं। ऐसे लोग मध्यवर्ग पर हुकूमत करते हैं।

7. "स्त्री शिक्षा.....काम है।" *(पृष्ठ 90)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक ने समाज में स्त्री की स्थिति पर विचार किया है। लेखक की मान्यता है कि स्त्री शिक्षा का एक मात्र लक्ष्य है उसे आत्म–निर्भर बनाना। भारतीय पुरुष परम्पराओं से प्रभावित होकर समझता है कि स्त्री को सहारा देना उसका काम है। स्त्री आत्म–निर्भर हो ही नहीं सकती। पुरुष उसके इस रूप को मान्यता नहीं दे सकता।

विशेष :- जिस समय इस उपन्यास की रचना हुई थी, उस समय स्त्री शिक्षा को असामान्य समझा जाता था। इस दृष्टि से लेखक ने स्त्री के स्वावलम्बी होने के प्रति पुरुष की प्रतिक्रिया का वर्णन किया है।

8. "घर बिना स्त्री.....है उसे।" *(पृष्ठ 91)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक ने उपन्यास की स्त्री–पात्र माया के द्वारा स्त्री के महत्व पर विचार किया है। माया के विचार से पुरुष स्त्री को आश्रय देकर उस पर कोई अहसान नहीं करता। स्त्री का भी अपना महत्व है, क्योंकि घर तो उसी से बनता है। स्त्री घर बनाती है, बच्चों को जन्म देती है। वह सृष्टि और ममता है। वह पुरुष का संरक्षण भी चाहती है, परन्तु पुरुष को भी स्त्री का आश्रय चाहिए तभी उसका घर कायम रह सकता है।

विशेष :- इन पंक्तियों में लेखक ने बड़े सुन्दर शब्दों में यह स्पष्ट करना चाहा है कि स्त्री एवं पुरुष दोनों ही अपना–अपना महत्व रखते हैं। यदि पुरुष स्त्री को संरक्षण देता है, तो स्त्री भी उसका घर बनाती है और उसके जीवन को खुशहाली से भर देती है।

9. "यह हाथ.....करना ही था।" *(पृष्ठ 110)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक ने केशव की दयनीय अवस्था का वर्णन किया है। मोहन के इलाज के लिए दूसरों से पैसा मांगना, दूसरों के सामने हाथ फैला कर अपनी मज़बूरी दिखाना केशव को बहुत कष्टदायी एवं अपमानजनक लगता है। यह उसके लिए एक कड़वा अनुभव है लेकिन इस अपमान को सहने के लिए वह विवश है।

विशेष :- लेखक ने इस गद्यांश में एक सत्य का प्रतिपादन किया है कि किसी से कुछ मांगना बहुत ही कष्टदायी होता है। व्यक्ति के आत्म–सम्मान पर गहरी चोट लगती है।

10. "दुनिया में.....जड़े हैं।" *(पृष्ठ 121)*

प्रसंग :- वही

व्याख्या :- इन पंक्तियों में लेखक ने मनुष्य के व्यवहार के कुछ महत्वपूर्ण पहलूओं पर विचार किया है। लेखक के अनुसार दुनिया में अधिकतर आदमी इमानदारी से जीना चाहते हैं, परन्तु हालात उन्हें बेईमानी करने के लिए मज़बूर कर देते हैं। गरीबी और आभावों से प्रभावित होकर मनुष्य कब बेईमानी करने लगे, यह कहा नहीं जा सकता।

विशेष :- लेखक ने इन पंक्तियों में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि मज़बूरी में व्यक्ति अपने आदर्श भूल कर कुमार्ग पर चल पड़ता है। यह मानव स्वभाव की एक सामान्य कमज़ोरी है, जो ईमानदार लोगों को बेईमान बना देती है।

2.4.5 सारांश

इस पाठ में आपको 'थके पांव' उपन्यास में चित्रित परिवेश का परिचय दिया गया है और साथ ही इसके संरचना–शिल्प पर विचार किया गया है। यह उपन्यास मध्यवर्ग के एक परिवार के जीवन से सम्बन्ध रखता है। लेखक ने पात्रों के चरित्र एवं स्वभाव के माध्यम से एक साधारण परिवार की स्थिति का सजीव वर्णन किया है। मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए लेखक ने एक सामान्य मानव के जीवन की उस अवस्था को उभारने का प्रयत्न किया है, जिसमें वह स्वयं को असहाय पाता है। जीवन के संघर्ष उसे बुरी तरह से परास्त कर देते हैं और उसे लगता है कि वह अपने 'थके पांवों' से आगे नहीं बढ़ सकेगा।

2.4.6 प्रश्नावली

1. इस उपन्यास में किस प्रकार का परिवेश–चित्रित हुआ है?
2. 'थके पांव' उपन्यास में चित्रित परिवेश में किस नये सामाजिक परिवर्तन का संकेत है?
3. इस उपन्यास की भाषा किस प्रकार की है?
4. यह उपन्यास किस शैली में लिखा गया है?
5. 'थके पांव' उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य क्या है?
6. इस उपन्यास में स्त्री जीवन से सम्बन्धित किस समस्या पर विचार किया गया है?
7. जीवन सम्बन्धी विभिन्न संदेश देने के लिए लेखक ने किस पात्र को चुना है?
8. स्त्री शिक्षा का समर्थन करने के लिए लेखक ने किन दो स्त्री पात्रों का परिचय दिया है?
9. इस उपन्यास की कथा में लेखक का उद्देश्य समाज के किस वर्ग की समस्याओं का प्रतिपादन करना है?

2.4.7 सहायक पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ – केशवदास शर्मा
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल

Mandatory Student Feedback Form

https://forms.gle/KS5CLhvpwrpgjwN98

Note: Students, kindly click this google form link, and fill this feedback form once.